गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 081
दि. 20.07.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

बादल फटे तो मची तबाही, बाढ़-भूस्खलन से जम्मू-कश्मीर कराहा

पुंछ में सबसे ज्यादा नुकसान, 11 की मौत, कई लापता; अमरनाथ और वैष्णो देवी यात्रा रोकी गई, 23 जुलाई तक भारी बारिश का अलर्ट

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में मानसून ने इस बार ऐसा रौद्र रूप दिखाया है कि कई इलाकों में जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। पुंछ और राजौरी जिलों में रविवार को हुई मूसलाधार बारिश के बाद अचानक आई बाढ़, बादल फटने जैसी स्थिति और भूस्खलन ने भारी तबाही मचा दी। अलग-अलग घटनाओं में अब तक 11 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि कई लोग अब भी लापता बताए जा रहे हैं। सबसे अधिक नुकसान पुंछ जिले की सुरनकोट तहसील में हुआ है, जहां कई मकान मलबे में दब गए, सड़कें टूट गईं और कई गांवों का संपर्क बाहरी दुनिया से कट गया। लगातार जारी बारिश के कारण राहत एवं बचाव कार्य भी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। प्रशासन के अनुसार शनिवार देर रात से शुरू हुई तेज बारिश रविवार सुबह तक लगातार जारी रही। पहाड़ी क्षेत्रों में पानी का बहाव अचानक बढ़ने से छोटे-छोटे नाले उफान पर आ गए और कई स्थानों पर भूस्खलन की घटनाएं हुईं। सुरनकोट के लोअर मुराह गांव में भारी बारिश के कारण पहाड़ी का बड़ा हिस्सा खिसक गया और एक मकान मलबे में दब गया। हादसे के समय घर के भीतर मौजूद आठ लोग इसकी चपेट में आ गए। सूचना मिलते ही पुलिस, सेना, एसडीआरएफ और स्थानीय प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंचीं और राहत अभियान शुरू किया। अब तक मलबे से पांच शव बरामद किए जा चुके हैं, जबकि अन्य लोगों की तलाश जारी है। प्रशासन का कहना है कि लगातार बारिश और ढीली पड़ चुकी पहाड़ियों के कारण बचाव अभियान में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इसी तरह सुरनकोट के संगला गांव में अचानक आई बाढ़ ने एक परिवार को अपनी चपेट में ले लिया। तेज बहाव में अब्दुल हमीद, उनकी पत्नी शरीफा बेगम, बेटी अरीबा और बहन मनीरा बेगम बह गए। स्थानीय लोगों ने उन्हें बचाने की कोशिश की, लेकिन पानी का तेज बहाव किसी को भी पास नहीं जाने दे रहा था। प्रशासन ने एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की मदद से तलाशी अभियान शुरू किया है, हालांकि समाचार लिखे जाने तक परिवार के सदस्यों का कोई सुराग नहीं मिल पाया था।

बारिश और भूस्खलन का सिलसिला यहीं नहीं रुका। नूनाबंदी गांव में एक अन्य मकान ढह जाने से 28 वर्षीय नाजिया कौसर की मौत हो गई, जबकि उनके पति मोहम्मद हाफिज और तीन छोटे बच्चों को गंभीर हालत में मलबे से निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया। वहीं संगलानी क्षेत्र में मकान गिरने से 22 वर्षीय शाहजैब अहमद की जान चली गई। मरहोट क्षेत्र में तेज बहाव वाले नाले में बहने से एक नाबालिग लड़की इरम की मौत हो गई, जबकि धुंधक लाथूंग पुल के पास एक अज्ञात महिला का शव भी बरामद हुआ। पुंछ की हवेली तहसील में छह मकानों के ढहने की घटना में एक व्यक्ति की मौत हुई। उधर राजौरी जिले में भी बाढ़ के दौरान नदी से एक महिला का शव बरामद किया गया है।

बारिश के कारण पुंछ और राजौरी के कई इलाकों में सैकड़ों मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं। कई स्थानों पर सड़कें बह गई हैं और पुलों को नुकसान पहुंचा है, जिससे राहत सामग्री पहुंचाने में परेशानी हो रही है। नदियों और नालों के उफान पर आने से खेतों में खड़ी फसलें भी पानी में डूब गई हैं। प्रशासन ने एहतियात के तौर पर निचले इलाकों में रहने वाले सैकड़ों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया है। कई स्कूलों और सरकारी भवनों को अस्थायी राहत शिविरों में बदल दिया गया है, जहां प्रभावित परिवारों के लिए भोजन, पेयजल और दवाइयों की व्यवस्था की जा रही है।

राजौरी जिले में भी हालात चिंताजनक बने हुए हैं। यहां नए बस अड्डे और आसपास के निचले क्षेत्रों में बाढ़ का पानी भर गया। कई वाहन तेज बहाव में बह गए, जबकि दर्जनों वाहन पानी में डूबकर क्षतिग्रस्त हो गए। प्रशासन ने लोगों से अनावश्यक यात्रा न करने और नदी-नालों के किनारे जाने से बचने की अपील की है। स्थानीय प्रशासन, सेना और आपदा प्रबंधन की टीमें लगातार संवेदनशील इलाकों का दौरा कर रही हैं और फंसे हुए लोगों को सुरक्षित निकालने का प्रयास कर रही हैं।

मौसम विभाग ने अगले कुछ दिनों के लिए भी राहत के संकेत नहीं दिए हैं। विभाग ने 23 जुलाई तक जम्मू-कश्मीर के कई हिस्सों में भारी से बहुत भारी बारिश की चेतावनी जारी करते हुए रेड अलर्ट घोषित किया है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार पहाड़ी क्षेत्रों में और अधिक भूस्खलन, फ्लैश फ्लड तथा नदी-नालों के जलस्तर में तेजी से वृद्धि की आशंका बनी हुई है। प्रशासन ने लोगों से मौसम संबंधी चेतावनियों का पालन करने और बिना आवश्यक कारण घरों से बाहर न निकलने की सलाह दी है।

खराब मौसम और यात्रियों की सुरक्षा को देखते हुए प्रशासन ने अमरनाथ यात्रा, माता वैष्णो देवी यात्रा तथा श्री शिव खोरी यात्रा को अस्थायी रूप से रोक दिया है। अधिकारियों ने बताया कि अमरनाथ यात्रा को पहलगाम और बालटाल दोनों मार्गों से स्थगित कर दिया गया है। बालटाल, नुनवान-चंदनवाड़ी आधार शिविरों और जम्मू के भगवती नगर यात्री निवास से भी श्रद्धालुओं को आगे जाने की अनुमति नहीं दी जा रही है। प्रशासन का कहना है कि मौसम सामान्य होने और मार्ग सुरक्षित घोषित किए जाने के बाद ही यात्रा दोबारा शुरू की जाएगी। उल्लेखनीय है कि तीन जुलाई से प्रारंभ हुई अमरनाथ यात्रा में अब तक 3.76 लाख से अधिक श्रद्धालु बाबा बर्फानी के दर्शन कर चुके हैं।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से फोन पर बातचीत कर प्रभावित क्षेत्रों की जानकारी ली। उन्होंने केंद्र सरकार की ओर से हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने भी अधिकारियों को राहत एवं बचाव कार्यों में किसी प्रकार की ढिलाई न बरतने और प्रभावित परिवारों तक तत्काल सहायता पहुंचाने के निर्देश दिए हैं।

लगातार हो रही बारिश, भूस्खलन और बाढ़ ने जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी इलाकों में एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि प्राकृतिक आपदाओं के सामने मानव जीवन कितना असुरक्षित हो जाता है। प्रशासन राहत और बचाव कार्यों में जुटा है, लेकिन मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियां चुनौती बनी हुई हैं। ऐसे में अगले कुछ दिन पूरे क्षेत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं और लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है।

बंगाल की सुरक्षा और सीमा प्रबंधन पर केंद्र की नजर, अमित शाह ने कानून-व्यवस्था की समीक्षा के साथ सीमा सुरक्षा परियोजनाओं को दी रफ्तार

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में कानून-व्यवस्था, सीमा सुरक्षा और आंतरिक सुरक्षा से जुड़े मुद्दों को लेकर केंद्र सरकार ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्य के तीन दिवसीय दौरे के दौरान रविवार को वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक कर कानून-व्यवस्था की स्थिति, सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा और संगठित अपराध से निपटने की तैयारियों का विस्तृत आकलन किया। बांग्लादेश, नेपाल और भूटान से लगी संवेदनशील सीमाओं वाले पश्चिम बंगाल में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर हुई इस बैठक को रणनीतिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। बैठक ऐसे समय हुई है, जब हाल ही में राज्य में 'पश्चिम बंगाल सार्वजनिक सुरक्षा और असामाजिक गतिविधियों पर नियंत्रण अधिनियम' लागू किया गया है, जिसके माध्यम से संगठित अपराध, अवैध गतिविधियों और सार्वजनिक सुरक्षा से जुड़े मामलों में प्रशासन को अधिक अधिकार दिए गए हैं।

सूत्रों के अनुसार, दक्षिण कोलकाता में आयोजित इस उच्चस्तरीय बैठक में राज्य प्रशासन और पुलिस के शीर्ष अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में मुख्य सचिव मनोज अग्रवाल, गृह सचिव संघमित्रा घोष, राज्य पुलिस प्रमुख सिद्धार्थ नाथ गुप्ता तथा सीआईडी के वरिष्ठ अधिकारी एन.आर. बाबू सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। गृह मंत्री ने राज्य में कानून-व्यवस्था की मौजूदा स्थिति, सीमावर्ती जिलों की सुरक्षा, अपराध नियंत्रण, साइबर अपराध, अवैध खनन, तस्करी और संगठित अपराध से जुड़े मामलों की समीक्षा की तथा विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय पर जोर दिया। पश्चिम बंगाल की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए सुरक्षा एजेंसियां लंबे समय से इसे संवेदनशील राज्य मानती रही हैं। राज्य की लगभग 2,217 किलोमीटर लंबी सीमा बांग्लादेश से लगती है, जबकि नेपाल और भूटान से भी इसकी सीमाएं जुड़ी हुई हैं। यही कारण है कि सीमा पार से होने वाली घुसपैठ, तस्करी, नकली मुद्रा, मादक पदार्थों की अवैध आवाजाही और अन्य आपराधिक गतिविधियों को रोकना केंद्र और राज्य दोनों के लिए बड़ी चुनौती माना जाता है। समीक्षा बैठक में इन सभी मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई और सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत बनाने पर बल दिया गया।

अपने दौरे के दौरान अमित शाह ने उत्तर बंगाल में भारत-बांग्लादेश सीमा का भी निरीक्षण किया। उन्होंने सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की अग्रिम चौकियों का दौरा कर जवानों से बातचीत की और सीमा पर तैनात सुरक्षा बलों की कार्यप्रणाली की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने आधुनिक तकनीकों के उपयोग का भी जायजा लिया। विशेष रूप से रेडियो आधारित 'फेंस ब्रीच डिटेक्शन सिस्टम' का निरीक्षण किया गया, जो सीमा पर लगी बाड़ में किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ या घुसपैठ की कोशिश होने पर तुरंत सुरक्षा बलों को अलर्ट कर देता है। अधिकारियों के अनुसार यह तकनीक सीमाई सुरक्षा को अधिक प्रभावी और त्वरित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। गृह मंत्री ने सीमा सुरक्षा को और मजबूत करने के उद्देश्य से बीएसएफ के लिए 77.06 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया। इनमें लगभग 47 करोड़ रुपये की लागत वाली तीन प्रमुख बीएसएफ परियोजनाएं शामिल हैं। इसके अतिरिक्त सीमा क्षेत्र में अधिग्रहित भूमि पर करीब 30 करोड़ रुपये की लागत से चार किलोमीटर लंबी नई सीमा बाड़ के निर्माण की आधारशिला भी रखी गई। अधिकारियों का मानना है कि इन परियोजनाओं के पूरा होने से सीमा प्रबंधन अधिक प्रभावी होगा और अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने में सहायता मिलेगी। गृह मंत्रालय के अनुसार, सीमा पर आधुनिक निगरानी तकनीकों के उपयोग, बेहतर आधारभूत ढांचे और जवानों के लिए सुविधाओं के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सीमा चौकियों के आधुनिकीकरण, संचार व्यवस्था में सुधार तथा निगरानी तंत्र को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है, ताकि किसी भी संभावित खतरे का समय रहते सामना किया जा सके।

अपने दौरे के दौरान अमित शाह ने सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़े एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम में भी हिस्सा लिया। उन्होंने कोलकाता स्थित नेशनल लाइब्रेरी परिसर में भारत के पहले भाषा संग्रहालय 'शब्दलोक' का उद्घाटन किया। केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से विकसित यह संग्रहालय भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को समर्पित है।

हर 10 में 9 भारतीयों में बढ़ रहा 'साइलेंट हार्ट रिस्क', आईसीएमआर अध्ययन ने बढ़ाई चिंता; कम उम्र में भी खराब कोलेस्ट्रॉल का खतरा

नई दिल्ली। भारत में हृदय रोगों का खतरा अब केवल बुजुर्गों या पहले से बीमार लोगों तक सीमित नहीं रह गया है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के एक बड़े राष्ट्रीय अध्ययन ने देश की स्वास्थ्य स्थिति को लेकर गंभीर चेतावनी दी है। अध्ययन के अनुसार, देश के 87.3 प्रतिशत वयस्कों में असामान्य लिपिड स्तर (डिसलिपिडमिया) पाया गया है। आसान शब्दों में कहें तो भारत के लगभग हर 10 में से 9 वयस्क किसी न किसी रूप में खराब कोलेस्ट्रॉल की समस्या से जूझ रहे हैं। सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि इनमें बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जिन्हें न तो मधुमेह है, न उच्च रक्तचाप और न ही मोटापा। यानी देखने में पूरी तरह स्वस्थ दिखाई देने वाले लोग भी गंभीर हृदय रोगों के खतरे के दायरे में आ चुके हैं।

आईसीएमआर-इंडियाबी अध्ययन के तहत देश के सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से 23,665 वयस्कों की लिपिड प्रोफाइल का विस्तृत विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय आबादी में कोलेस्ट्रॉल और रक्त में वसा से जुड़े जोखिमों का वास्तविक आकलन करना था। रिपोर्ट के निष्कर्ष बताते हैं कि असामान्य लिपिड स्तर अब किसी विशेष वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे देश में तेजी से फैलती सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बन चुका है।

विशेषज्ञों के अनुसार, डिसलिपिडमिया वह स्थिति है जिसमें शरीर में एलडीएल (खराब कोलेस्ट्रॉल) और ट्राइग्लिसराइड का स्तर बढ़ जाता है, जबकि एचडीएल (अच्छा कोलेस्ट्रॉल) कम हो जाता है। एचडीएल का मुख्य कार्य धमनियों में जमा अतिरिक्त वसा को हटाकर उसे यकृत तक पहुंचाना होता है, जहां उसका निष्कासन हो जाता है। जब एचडीएल का स्तर कम होता है, तो धमनियों में वसा धीरे-धीरे जमा होने लगती है। इससे रक्त प्रवाह प्रभावित होता है और हार्ट अटैक, स्ट्रोक, उच्च रक्तचाप तथा अन्य हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है।

रिपोर्ट में यह भी सामने आया कि भारतीयों में सबसे आम समस्या कम एचडीएल और अधिक ट्राइग्लिसराइड की है। चिकित्सकों का कहना है कि यह संयोजन विशेष रूप से खतरनाक माना जाता है क्योंकि इससे इंसुलिन प्रतिरोध बढ़ता है और आगे चलकर टाइप-2 डायबिटीज तथा मेटाबोलिक सिंड्रोम जैसी समस्याओं का जोखिम भी बढ़ जाता है। आईसीएमआर से जुड़े विशेषज्ञ डॉ. आर. एम. अंजना के अनुसार, असामान्य लिपिड स्तर अब भारतीयों में इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि इसकी शुरुआत अक्सर 30 वर्ष की आयु के आसपास ही दिखाई देने लगी है। अध्ययन में 30 से 39 वर्ष आयु वर्ग के लोगों में सबसे अधिक जोखिम दर्ज किया गया। यह संकेत देता है कि हृदय रोग अब केवल बढ़ती उम्र की बीमारी नहीं रह गया है, बल्कि युवा आबादी भी इसकी चपेट में तेजी से आ रही है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि इस बढ़ती समस्या के पीछे सबसे बड़ा कारण बदलती जीवनशैली है। पिछले कुछ वर्षों में फास्ट फूड, पैकेज्ड और अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का सेवन बढ़ा है, जबकि नियमित शारीरिक गतिविधियां कम होती जा रही हैं। लंबे समय तक बैठकर काम करना, व्यायाम की कमी, तनावपूर्ण जीवन, अपर्याप्त नींद और तंबाकू व धूम्रपान जैसी आदतें भी कोलेस्ट्रॉल असंतुलन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि शहरी महिलाओं में ग्रामीण महिलाओं की तुलना में डिसलिपिडमिया का खतरा अधिक पाया गया। विशेषज्ञों का मानना है कि शहरी जीवनशैली, कम शारीरिक श्रम, कार्यालयों में लंबे समय तक बैठकर काम करना, हार्मोनल परिवर्तन तथा प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का बढ़ता सेवन इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि यह समस्या केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है, बल्कि महिलाओं में भी तेजी से बढ़ रही है।

चिकित्सकों का कहना है कि लंबे समय तक खराब कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ा रहने पर शरीर में कोई स्पष्ट लक्षण दिखाई नहीं देते। यही कारण है कि इसे अक्सर 'साइलेंट रिस्क' कहा जाता है। अधिकांश लोगों को इसका पता तब चलता है, जब उन्हें हार्ट अटैक, स्ट्रोक या अन्य गंभीर हृदय संबंधी समस्या का सामना करना पड़ता है। इसलिए केवल लक्षणों के आधार पर स्वास्थ्य का आकलन करना पर्याप्त नहीं है।

विशेषज्ञों ने सलाह दी है कि अब केवल मधुमेह, मोटापा या उच्च रक्तचाप वाले लोगों की ही नहीं, बल्कि सामान्य दिखने वाले वयस्कों की भी नियमित लिपिड प्रोफाइल जांच की जानी चाहिए। समय रहते जांच कराने से जोखिम की पहचान हो सकती है और जीवनशैली में बदलाव या आवश्यक उपचार के माध्यम से भविष्य में गंभीर हृदय रोगों को काफी हद तक रोका जा सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, इस खतरे को कम करने के लिए दैनिक जीवन में कुछ सरल लेकिन प्रभावी बदलाव आवश्यक हैं।

खाड़ी में युद्ध का दायरा बढ़ा, अमेरिकी हमलों के जवाब में ईरान का पलटवार; कुवैत-बहरीन तक पहुंची जंग की आंच

तेहरान/वाशिंगटन। पश्चिम एशिया में जारी सैन्य संघर्ष अब ऐसे मोड़ पर पहुंच गया है, जहां अमेरिका और ईरान के बीच सीधी टकराहट का दायरा लगातार बढ़ता दिखाई दे रहा है। जॉर्डन में अमेरिकी सैनिकों की मौत के बाद शुरू हुई जवाबी कार्रवाई अब खाड़ी क्षेत्र के कई देशों तक फैल गई है। अमेरिका ने लगातार आठवीं रात ईरान से जुड़े सैन्य ठिकानों पर हवाई हमले किए, जबकि इसके जवाब में ईरान ने कुवैत और बहरीन में मौजूद अमेरिकी सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाकर स्पष्ट संकेत दिया कि वह केवल अपने क्षेत्र तक सीमित रहकर जवाब नहीं देगा। दोनों देशों की ओर से जारी सैन्य कार्रवाई ने पूरे पश्चिम एशिया को नए सुरक्षा संकट के सामने खड़ा कर दिया है और क्षेत्रीय युद्ध की आशंकाएं पहले से कहीं अधिक गहरा गई हैं।

अमेरिकी सैन्य अधिकारियों के अनुसार जॉर्डन में हाल ही में हुए हमले में दो अमेरिकी सैनिकों की मौत और एक अन्य सैनिक के लापता होने के बाद वाशिंगटन ने अपनी सैन्य रणनीति और आक्रामक कर दी है। अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकॉम) ने दावा किया कि हमले के लिए ईरान समर्थित समूह जिम्मेदार थे। इसके बाद अमेरिकी लड़ाकू विमानों और ड्रोन ने ईरान से जुड़े कई सैन्य प्रतिष्ठानों, हथियार भंडारों और कमांड सेंटरों को निशाना बनाया। बताया जा रहा है कि 28 फरवरी से जारी इस संघर्ष में अब तक 16 अमेरिकी सैन्यकर्मियों की जान जा चुकी है, जिसके बाद अमेरिका ने जवाबी कार्रवाई की तीव्रता बढ़ा दी है।

दूसरी ओर, ईरान ने भी अपने रुख में किसी प्रकार की नरमी नहीं दिखाई। ईरानी सेना ने दावा किया कि उसने कुवैत में स्थित दो महत्वपूर्ण अमेरिकी सैन्य अड्डों—कैंप उदैरी और अली अल सलेम एयर बेस—पर ड्रोन हमले किए। ईरानी अधिकारियों के अनुसार इन हमलों का उद्देश्य अमेरिकी सैन्य क्षमताओं को नुकसान पहुंचाना था। उनका दावा है कि कैंप उदैरी में गोला-बारूद के भंडारण क्षेत्र तथा अली अल सलेम एयर बेस में पैट्रियट रडार प्रणाली और हवाई निगरानी उपकरणों को लक्ष्य बनाया गया। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है, लेकिन हमलों के बाद कुवैत की सुरक्षा एजेंसियों ने पूरे देश में हाई अलर्ट घोषित कर दिया।

कुवैत सरकार ने पुष्टि की कि संभावित ड्रोन और मिसाइल हमलों को देखते हुए उसकी वायु रक्षा प्रणाली को तत्काल सक्रिय किया गया। सुरक्षा बलों ने कई क्षेत्रों में निगरानी बढ़ा दी, जबकि नागरिकों से सतर्क रहने की अपील की गई। स्थानीय अधिकारियों का कहना है कि कुछ महत्वपूर्ण नागरिक ढांचों को भी नुकसान पहुंचा है। विशेष रूप से बिजली और जल आपूर्ति से जुड़े एक संयंत्र में आग लगने की सूचना सामने आई है। बताया जा रहा है कि लगातार दूसरे दिन इस प्रकार की घटना होने से आवश्यक सेवाओं के संचालन पर भी असर पड़ा है।

इस बीच बहरीन में भी तनाव चरम पर पहुंच गया। संभावित हवाई हमले की आशंका के चलते कई इलाकों में चेतावनी सायरन बजाए गए और सुरक्षा एजेंसियों ने संवेदनशील सैन्य तथा नागरिक क्षेत्रों की सुरक्षा बढ़ा दी। अमेरिकी नौसेना के पांचवें बेड़े की मौजूदगी के कारण बहरीन पहले से ही रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसे में यहां बढ़ी सैन्य गतिविधियों ने पूरे खाड़ी क्षेत्र की चिंता और बढ़ा दी है।

संघर्ष के दौरान ईरान ने अमेरिका पर अपने परमाणु कार्यक्रम को निशाना बनाने का भी आरोप लगाया। ईरान के परमाणु ऊर्जा संगठन ने कहा कि दक्षिणी ईरान के दरखोविन स्थित निर्माणाधीन परमाणु बिजली संयंत्र पर अमेरिकी हमला अंतरराष्ट्रीय कानूनों और परमाणु सुरक्षा मानकों का गंभीर उल्लंघन है। संगठन ने इस कार्रवाई की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि शांतिपूर्ण परमाणु परियोजनाओं को निशाना बनाना वैश्विक सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा पैदा कर सकता है। हालांकि अमेरिकी अधिकारियों ने इस संबंध में तत्काल कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी।

ईरान के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार हालिया सैन्य हमलों में शुक्रवार तक कम से कम 50 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 500 से अधिक लोग घायल हुए हैं। घायलों में बड़ी संख्या में नागरिक भी शामिल बताए जा रहे हैं। कई अस्पतालों में आपातकाल जैसी स्थिति बनी हुई है और प्रभावित इलाकों में राहत एवं चिकित्सा सेवाओं को युद्धस्तर पर संचालित किया जा रहा है।

ईरान के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए अमेरिका को कड़ी चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि ईरान अपने नागरिकों और राष्ट्रीय संप्रभुता पर हुए हमलों का ऐसा जवाब देगा जिसे अमेरिका लंबे समय तक नहीं भूल पाएगा। उन्होंने कहा कि देश किसी भी बाहरी दबाव के आगे झुकने वाला नहीं है और यदि हमले जारी रहे तो जवाब और अधिक व्यापक होगा।

ईरान के वरिष्ठ सैन्य सलाहकार मेजर जनरल मोहसेन रजाई ने भी अमेरिका को स्पष्ट संदेश देते हुए कहा कि यदि वाशिंगटन ने सैन्य कार्रवाई जारी रखी तो ईरान पूर्ण पैमाने पर अपना आक्रामक अभियान फिर शुरू करेगा। उनके अनुसार ईरानी सशस्त्र बल किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार हैं और क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकाने उनकी पहुंच से बाहर नहीं हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि मौजूदा घटनाक्रम केवल अमेरिका और ईरान तक सीमित नहीं है। कुवैत, बहरीन, जॉर्डन और खाड़ी के अन्य देशों में मौजूद अमेरिकी सैन्य अड्डों के कारण पूरा क्षेत्र इस संघर्ष की चपेट में आ सकता है। ऊर्जा आपूर्ति, अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार और वैश्विक तेल बाजार पर भी इसका सीधा प्रभाव पड़ने की आशंका जताई जा रही है। यदि दोनों पक्षों के बीच सैन्य कार्रवाई इसी गति से जारी रही तो यह टकराव व्यापक क्षेत्रीय युद्ध का रूप ले सकता है, जिसका असर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा व्यवस्था पर पड़ सकता है।

संपादकीय

आखिर भारतीय होने का अंतिम प्रमाण

कभी किसी व्यक्ति से उसका परिचय पूछना सबसे सहज बात हुआ करती थी। "आप कौन हैं?" और सामने से मुस्कुराते हुए उत्तर मिलता था—"मैं भारतीय हूं।" इस एक वाक्य में गर्व था, अपनापन था और उस मिट्टी से जुड़ाव की अनुभूति थी, जहां उसने जन्म लिया, परवरिश पाई और अपना जीवन बनाया। उस समय शायद ही किसी ने यह कल्पना की होगी कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब इस सरल उत्तर के बाद अगला प्रश्न होगा—"अच्छा, इसका सबूत क्या है?"

यही प्रश्न आज के दौर का सबसे बड़ा व्यंग्य बन गया है। पहले पहचान व्यक्ति के व्यवहार, उसके संस्कार, उसकी भाषा और उसके समाज से जुड़ाव से होती थी। कवियों ने भारत को अपनी मां कहा, हिमालय को अपना पिता बताया और गंगा को अपनी पहचान माना। फिल्मों में नायक पूरे गर्व से कहता था कि वह भारत का रहने वाला है और भारत की बात सुनाता है। उस समय किसी दर्शक ने टिकट खिड़की पर जाकर यह नहीं पूछा कि नायक के पास नागरिकता का कौन-सा प्रमाण है। भारतीय होना भावना भी थी और विश्वास भी।

लेकिन समय बदल गया। अब विश्वास की जगह दस्तावेजों ने ले ली है। किसी भी कार्यालय में जाइए, सबसे पहले कहा जाता है—पहचान का प्रमाण दीजिए। आप आत्मविश्वास से आधार कार्ड निकालते हैं। वर्षों पहले बड़ी मशक्कत से बनवाया गया यह कार्ड आपको लगता है कि आपकी पहचान का सबसे मजबूत दस्तावेज होगा। मगर तुरंत उत्तर मिलता है—"यह पहचान का दस्तावेज है, लेकिन हर मामले में नागरिकता का अंतिम प्रमाण नहीं माना जाता।"

आप थोड़ा असहज होते हैं और राशन कार्ड सामने रख देते हैं। जवाब आता है—"यह तो सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए है।" आप ड्राइविंग लाइसेंस दिखाते हैं तो कहा जाता है—"इससे केवल यह साबित होता है कि आप वाहन चलाने के योग्य हैं।" बिजली का बिल दिखाइए तो उत्तर मिलता है—"यह तो केवल पते का रिकॉर्ड है।" बैंक पासबुक रख दीजिए तो कहा जाएगा कि यह बैंक खाते का प्रमाण है। मकान के कागजात दिखाइए तो उनकी भी सत्यता की जांच की बात होगी। पासपोर्ट दिखाने पर कहा जाएगा कि यह विदेश यात्रा के लिए जारी दस्तावेज है। मतदाता पहचान-पत्र दिखाने पर भी कई बार अतिरिक्त रिकॉर्ड मांगे जा सकते हैं। तब सामान्य नागरिक के मन में सहज ही प्रश्न उठता है कि आखिर ऐसा कौन-सा दस्तावेज है, जिसे दिखाने के बाद कोई दूसरा प्रमाण न मांगा जाए? यह स्थिति केवल कागज़ों की नहीं है, बल्कि उस व्यवस्था की भी है जिसमें हर प्रमाण के बाद एक और प्रमाण की आवश्यकता खड़ी हो जाती है। पिछले कई दशकों में नागरिकों से अलग-अलग पहचान-पत्र बनवाए गए। कभी राशन कार्ड सबसे महत्वपूर्ण था, फिर मतदाता पहचान-पत्र आया, उसके बाद पैन कार्ड, फिर आधार कार्ड, डिजिटल सत्यापन, ई-केवाईसी और न जाने कितनी नई व्यवस्थाएं। हर बार लोगों ने सरकार के निर्देशों का पालन किया, लंबी कतारों में खड़े रहे, दस्तावेज जमा किए और यह विश्वास किया कि अब उनकी पहचान पूरी तरह सुरक्षित हो गई है। लेकिन कुछ समय बाद फिर कोई नई प्रक्रिया सामने आ जाती है और नागरिक को दोबारा वही यात्रा शुरू करनी पड़ती है। इस पूरी प्रक्रिया का सबसे कठिन पक्ष उन लोगों के सामने आता है, जिनके पास आधुनिक रिकॉर्ड कभी बने ही नहीं। गांवों में दशकों पहले जन्म लेने वाले लाखों लोगों के पास जन्म प्रमाणपत्र नहीं हैं, क्योंकि उस समय अधिकांश जन्म घरों में होते थे और सरकारी पंजीकरण की व्यवस्था इतनी व्यापक नहीं थी। कई परिवारों के पास अपने माता-पिता या दादा-दादी के पुराने दस्तावेज भी उपलब्ध नहीं हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि उनका इस देश से रिश्ता कम हो गया। उन्होंने इसी मिट्टी में जीवन बिताया, इसी देश के कानूनों का पालन किया, कर चुकाए, मतदान किया और समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाई। ऐसे लोगों के लिए हर नए प्रमाण की मांग कई बार चिंता और असमंजस का कारण बन जाती है। निस्संदेह किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए सटीक अभिलेख और विश्वसनीय पहचान व्यवस्था आवश्यक होती है। अवैध घुसपैठ, फर्जी दस्तावेज, पहचान की धोखाधड़ी और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में मजबूत दस्तावेजी व्यवस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रशासन के लिए भी यह जरूरी है कि सरकारी योजनाओं का लाभ सही व्यक्ति तक पहुंचे और चुनावी प्रक्रिया पारदर्शी बनी रहे। इसलिए दस्तावेजों का महत्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता। लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण यह भी है कि ईमानदार नागरिकों को अनावश्यक भ्रम और बार-बार की जटिल प्रक्रियाओं से बचाया जाए।

एकजुटता और सद्भाव के प्रतीक थे तेजा सिंह समुंदरी

"तेजा सिंह समुंदरी अकाली आंदोलन के साहसी और लोकप्रिय नेता थे। उनका स्वभाव 'मुसीबतों के बीच भी शांत और स्थिर' रहता था। प्रो. रुचि राम साहनी की डायरियों के मुताबिक, उन्होंने साल 1922-23 में गुरु-का-बाग़ मोर्चे का नेतृत्व करते हुए अहिंसा और एकजुटता को बढ़ावा दिया। उन्हें समाज के हर वर्ग से समर्थन मिला।

बहुत कम लोगों को ही सरदार तेजा सिंह समुंदरी जैसे महान राष्ट्रीय नेता का योगदान याद होगा। उनका निधन, 100 साल पहले, 17 जुलाई, 1926 को, 44 साल की उम्र में लाहौर किले में हुआ था। वहां उन्हें ब्रिटिश सरकार ने नाभा की राजगद्दी से हटाए गए महाराजा रिपुदमन सिंह को फिर से सत्तासीन करवाने को लेकर हुए आंदोलन में भाग लेने के कारण कैद कर रखा था। मुझे तेजा सिंह समुंदरी के बारे में पहली बार पता अपने परदादा, प्रोफ़ेसर रुचि राम साहनी की अप्रकाशित डायरियों से चला। बहुत कम उम्र में ही, प्रोफ़ेसर साहनी ने 'हिस्ट्री ऑफ़ माई ओन टाइम्स' (मेरे वक्त का इतिहासनामा) तैयार करने का फ़ैसला किया था। उन्हें उम्मीद थी कि 'वे उस रोमांचक दौर की झलक- वह धुंधली ही क्यों न हो, जिसमें उन्हें जीने का सौभाग्य मिला था, उसे संजोकर, अपने पाठकों के लिए शब्दों में पिरो सकेंगे'। इनमें से एक अंक अकाली आंदोलन पर था। रुचि राम साहनी का अकाली आंदोलन से परिचय 1922-23 में गुरु-का-बाग़ मोर्चे से हुआ। यह सिखों का एक अहिंसक आंदोलन था। जो इसलिए शुरू हुआ कि गुरु-का-बाग़ गुरुद्वारे के पूर्व महंत ने एक पुरानी परंपरा पर आपत्ति जताई थी, जिसके तहत गुरु-के-लंगर के लिए जलाऊ लकड़ी गुरुद्वारे की ज़मीन पर उगे कीकर के पेड़ों से ली जाती थी। अगस्त 1922 में, अंग्रेज़ों ने महंत का साथ दिया और बिना इजाज़त ज़मीन में घुसपैठ के आरोप में पांच सिखों को गिरफ़्तार कर लिया। इसके जवाब में, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने हर दिन पांच सिखों को जलाऊ लकड़ी काटने के लिए भेजने का ऐलान किया। उन्हें रोज़ाना अंग्रेज़ों की मारपीट और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) ने अन्य भारतीयों से गुरु-का-बाग़ मोर्चे का चश्मदीद गवाह बनने की अपील की, जिसके बाद प्रेस ने इसमें काफ़ी दिलचस्पी दिखाई। पंजाब प्रांत कांग्रेस कमेटी ने हालात का जायज़ा लेने के लिए रुचि राम साहनी और मियां फ़ज़ल दीन को भेजा। साहनी ने जो देखा, उससे वे बहुत प्रभावित हुए व लिखा : 'मैं स्वीकार करता हूं कि जब तक मैंने वह होते हुए अपनी आंखों से नहीं देख लिया, तब तक मुझे सिख शहीदों और उनके गुरुओं की उन गाथाओं पर पूरा यकीन नहीं था, जिनमें बताया जाता है कि उन्होंने न सिर्फ़ बिना डरे, बल्कि खुशी-खुशी और चेहरे पर मुस्कान के साथ अत्यंत क्रूरता का सामना किया क्योंकि उन्हें यकीन था कि अकाल पुरख उनसे ऐसी ही सेवा की उम्मीद करते हैं। मैं उस क्रूरता के बारे में अपनी आंखों देखी बताना चाहता हूं जो 'गुरु-का-बाग' में सैकड़ों लोगों ने रोज़ाना सही थीं। वे होंठों पर 'वाहे गुरु, वाहे गुरु जी' मंत्र जपते हुए ऐसे जुल्म से गुज़रे, जिसके बारे में मैंने अपने समय में किसी और समुदाय के लोगों के साथ होते हुए नहीं सुना।' साहनी 'द ट्रिब्यून' के ट्रस्टी भी थे और उन्होंने अखबार से उन्हें अपना विशेष प्रतिनिधि बनाने के लिए कहा ताकि वे 'गुरु-का-बाग' में हो रही घटनाओं की रिपोर्टिंग कर सकें। वे रोज़ जत्थों के साथ जाते और एसजीपीसी के साथ पर्दे के पीछे रहकर काम भी करते थे। उनकी दी खबरें 'द ट्रिब्यून' में छपीं और बाद में गंडा सिंह द्वारा संपादित किताब 'स्ट्रगल फ़ॉर रिफ़ॉर्म ऑफ़ सिख श्राइन्स' का आधार बनीं।

इस किताब में साहनी ने जत्थों का जीवंत वर्णन किया है : 'हर सुबह अकाल तख़्त के सामने 'गुरु-का-बाग' मोर्चे के लिए जत्थों की रवानगी से पहले का नज़ारा प्रेरक होता था। सूरज उगते ही, जत्थे के सदस्य 'अमृत सरोवर' में डुबकी लगाने के बाद वहां इकट्ठा होते।' 'अकाल तख़्त से प्रस्थान और पवित्र सरोवर की परिक्रमा से होकर, जुलूस के रूप में आगे बढ़ने से पहले, सिख धर्मग्रंथों से भजन गाते थे, कभी-कभी तो बहुत भावुक दृश्य देखने को मिलते। कई बार, पत्नियां, बहनें, माताएं, यहां तक कि बूढ़ी दादी-नानियां भी यह प्रेरक समारोह देखने और अपने प्रियजनों को आशीर्वाद देने दूर-दूर से आतीं। जो एक पवित्र मिशन पर जा रहे थे, लेकिन उन्हें यकीन था कि दिन के अंत में वे उन्हें अपना मकसद पूरा कर वापस आते हुए देखेंगी, शायद गंभीर घायल और नीम बेहोश।'

जत्थों का सामना बहुत ज़्यादा क्रूरता से हुआ। रुचि राम साहनी को भी कई बार लाठियां खानी पड़ीं। लेकिन अकाली अपनी राह से नहीं डिगे और गुरुद्वारे की ओर बढ़ते रहते। मोर्चे की कमान एसपीजीसी के पास थी, जिसके अध्यक्ष तेजा सिंह समुंदरी थे। हालांकि, वे साहनी से लगभग 20 साल छोटे थे, फिर भी साहनी उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे : 'समुंदरी की चीजों को समझने की क्षमता विलक्षण और सटीक थी। वे किसी भी बात के ज़रूरी पहलू तुरंत समझ लेते और उन्हें गैरज़रूरी बातों से अलग कर देख सकते थे... गैरज़रूरी बातों पर लचीला रुख अपनाने को तैयार रहते, लेकिन जिन बातों को वे ज़रूरी और बुनियादी मानते, उन पर अडिग रहते। वे जन्मजात नेता थे; मैंने उन महान दिनों में देखा कि कैसे वे मुश्किल हालात को तुरंत भांप लेते और इतनी तेज़ी से फ़ैसला लेते कि हम में से कई लोग हैरान रह जाते थे।'

'मेरे वक्त का इतिहासनामा' में समुंदरी के बारे में रुचि राम साहनी लिखते हैं, 'मेरे लिए पाठकों को प्रधान जी (सरदार समुंदरी) के शानदार व्यक्तित्व के बारे में शब्दों में बयां करना कठिन है-मुश्किलों के तूफ़ान, हर तरफ़ से लगातार आ रही मांगों और अक्सर अमृतसर और शिमला में बैठे सर्वशक्तिमान अधिकारियों के कामों-योजनाओं के बारे में परेशान करने वाली खबरों के बीच भी उनका शांत स्वभाव; सूझ-बूझ और मुश्किल स्थिति में भी हंसमुख अंदाज़-ऐसी बातें जो दूसरे नेताओं को हताश कर दें; यह सब और अन्य बहुत कुछ जो उनके व्यवहार में झलकता था, वह उनको देखने वाले हर किसी में उस व्यक्ति के प्रति अटूट भरोसा पैदा कर देता, जिसकी कमान में वे काम कर रहे थे। लंबे और पतली कद-काठी, बिना किसी दिखावे या शानदार लिबास के, एकाएक उन्हें देखकर कोई भी उन्हें मामूली आदमी समझ सकता था। तथापि, ज़रूरत पड़ती, तो भीड़ के बीच तनकर खड़े हो जाते और पूरे भरोसे से ऐसे आदेश देते कि उनकी कही पर बिना हील हुज्जत अमल हो।' एक दिन, समुंदरी ने रुचि राम साहनी से कहा कि उन्होंने मोर्चा जीत लिया है। 'लेकिन भाई जी', साहनी ने कहा, 'मोर्चा तो अभी शुरू ही हुआ है। आप कैसे कह सकते हैं कि जीत लिया?' समुंदरी ने स्पष्ट किया : 'चूंकि अमृतसर के एसजीपीसी अस्पताल में काफी संख्या में घायल आंदोलनकारी आ रहे हैं, इसलिए कमेटी को तुरंत दरियों की ज़रूरत पड़ी। मैंने एक दुकानदार से खरीदारी की व बिल भेजने को कहा। अगले दिन, दरियां बिना किसी बिल के आ गईं, लोकल दुकानदारों ने पैसे लेने के बजाय दरियां दान कर दी थीं। मोर्चा 'जीत' लिया, क्योंकि इसने इलाके में ग़ैर-सिखों में भावनात्मक एकजुटता पैदा कर दी है'। आज, हम अक्सर अकाली आंदोलन को राष्ट्रवाद की मुख्यधारा से अलग और सिर्फ़ सिख मुद्दों पर केंद्रित मानते हैं। लेकिन रुचि राम साहनी की बातों से पता चलता है कि ऐसा नहीं था, समाज के हर वर्ग से अकालियों को मिला समर्थन इसका सबूत है। असल में, खुद अकाली आंदोलन ही इसके गवाह हैं।

समुंदरी के लिए एकजुटता और सांप्रदायिक सद्भाव अहम आदर्श थे। अप्रैल, 1923 में, बैसाखी के करीब, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक दंगे हुए। शांति बहाली को अकाली जत्थों ने सड़कों पर गश्त की; इसके लिए उन्हीं ब्रिटिश बलों ने उनकी तारीफ़ की, जिन्होंने बीते साल उन्हें जेल में डाला था! दंगे रुके, तो समुंदरी की अगुवाई में शिरोमणि कमेटी ने हिंदू और मुस्लिम समुदायों में दोस्ताना रिश्ते बहाल करने की पहल की। वे घर-घर जाकर शांति-सद्भाव की अपील करते। जबकि मौजूदा मुश्किल दौर में, 'सांप्रदायिक सद्भाव' का आदर्श ज़्यादा असरदार नहीं लगता, और न्याय के लिए होने वाले आंदोलनों को अक्सर 'आंदोलनजीवियों' की उपज कहकर खारिज कर दिया जाता है। तेजा सिंह समुंदरी शांति, अहिंसा और सामुदायिक भाईचारे के पक्षधर थे। दुर्भाग्य कि आज हमारे पास तेजा सिंह समुंदरी जैसे कद्दावर नेता नहीं जो हमें सच्चाई और सही रास्ते पर ले जा सकें।

कम उम्र में उनकी असमय मौत ने भारत को एक महान नेता से वंचित कर दिया। उन्हें याद करते हुए, हमें उन आदर्शों को भी याद रखना चाहिए जिन पर वे पहरा देते रहे : धर्मों और जातियों के बीच, और पुरुषों और महिलाओं के बीच बराबरी का।

प्रेरणा

जब बेटे ने थाम लिया पिता का हाथ : समय का सबसे सुंदर पड़ाव

जीवन का सबसे अद्भुत सत्य यह है कि समय कभी स्थिर नहीं रहता। वह चुपचाप चलता रहता है और चलते-चलते रिश्तों के अर्थ भी बदल देता है। एक समय ऐसा होता है जब पिता अपनी उंगली पकड़ाकर बेटे को चलना सिखाता है, गिरने से बचाता है, सड़क पार कराता है और दुनिया की हर मुश्किल से उसकी रक्षा करने का संकल्प लेता है। फिर एक दिन वही बेटा बड़ा होकर पिता का हाथ थाम लेता है। उस क्षण कोई घोषणा नहीं होती, कोई समारोह नहीं होता, लेकिन जीवन का सबसे गहरा परिवर्तन घटित हो चुका होता है। यह परिवर्तन केवल उम्र का नहीं, बल्कि जिम्मेदारी, प्रेम और विश्वास के हस्तांतरण का होता है।

एक सैनिक पिता के जीवन में यह परिवर्तन और भी गहरी संवेदनाओं के साथ आता है। देश की सीमाओं की रक्षा करने वाला सैनिक अपने परिवार के लिए उतना समय नहीं निकाल पाता, जितना एक सामान्य पिता निकाल सकता है। उसकी ड्यूटी उसकी इच्छाओं से बड़ी होती है। वह चाहता है कि बेटे के जन्म के समय उसके पास रहे, पहली मुस्कान देखे, पहला स्पर्श महसूस करे, लेकिन कई बार सीमा पर खड़ा सैनिक अपने ही घर में जन्म लेने वाले बच्चे का स्वागत नहीं कर पाता। देश पहले होता है और परिवार बाद में। यही सैनिक का धर्म भी है और उसकी सबसे बड़ी पीड़ा भी।

जब छुट्टियां मिलती हैं और वह पहली बार अपने छोटे-से बेटे को गोद में उठाता है, तब उसे लगता है जैसे वह किसी नन्हे इंसान को नहीं, बल्कि ईश्वर की सबसे सुंदर रचना को छू रहा हो। बच्चे की मुलायम हथेलियां, उसकी मासूम आंखें और बिना किसी पहचान के खिलखिलाती मुस्कान पिता के मन में ऐसा भाव भर देती हैं जिसे शब्दों में बांधना कठिन होता है। वह यह भी सोचता है कि यह बच्चा बड़ा होकर उसके जैसा दिखाई देगा या अपनी मां जैसा। लेकिन कुछ ही क्षणों बाद उसे महसूस होता है कि बच्चे का सबसे बड़ा परिचय किसी चेहरे से नहीं, उसकी मासूमियत से होता है। वह सचमुच ईश्वर का अंश लगता है।

फिर ड्यूटी बुला लेती है। विदा का क्षण आता है। पिता जाने के लिए उठता है और तभी छोटा-सा बच्चा उसकी उंगली पकड़ लेता है। शायद वह कुछ समझता नहीं, लेकिन उसका स्पर्श जैसे कह रहा होता है कि अभी मत जाओ। पिता मुस्कुराकर उसकी हथेली छुड़ाता है और सीमा की ओर लौट जाता है। उस समय उसे यह नहीं पता होता कि उसके जाने के बाद उसका बेटा उसकी तस्वीर देखकर ही पिता को पहचानना सीखेगा।

घर में मां रोज बच्चे को पिता की तस्वीर दिखाती है और पूछती है—"पापा कहां हैं?" बच्चा तस्वीर की ओर उंगली कर देता है। उसके लिए तस्वीर ही पिता बन जाती है। जब महीनों बाद पिता छुट्टी लेकर घर लौटता है, तब बच्चा सामने खड़े पिता को नहीं पहचानता और फिर तस्वीर की ओर इशारा कर देता है। उस पल पिता मुस्कुरा तो देता है, लेकिन भीतर कहीं एक टीस भी उठती है। उसे एहसास होता है कि देश की रक्षा करते-करते वह अपने ही बेटे के बचपन के कई अनमोल क्षणों से दूर रह गया।

समय फिर आगे बढ़ता है। बेटा धीरे-धीरे पिता को पहचानने लगता है। पहले "वो" कहकर बुलाता है, फिर "पापा" कहना सीख जाता है। सैनिक की पोस्टिंग बदलती है, परिवार साथ रहने लगता है और पहली बार पिता-बेटे का रिश्ता दूरी की जगह निकटता में सांस लेने लगता है। अब बेटा अपनी हर छोटी इच्छा पिता तक पहुंचाता है। कभी टॉफी चाहिए, कभी आइसक्रीम, कभी नया खिलौना। उसके लिए दुनिया का सबसे मजबूत और सबसे भरोसेमंद व्यक्ति उसका पिता होता है।

बचपन का सबसे सुंदर रंग यह होता है कि उसमें हर रास्ता खेल बन जाता है। स्कूल जाते समय सड़क भी खेल का मैदान होती है और पिता की बांह झूला बन जाती है। बेटा पूरी ताकत से पिता का हाथ पकड़कर झूलता है और पिता हंसते हुए उसे संभाल लेता है। बच्चे को पूरा विश्वास होता है कि उसके पापा कभी नहीं गिर सकते। यह विश्वास किसी तर्क पर नहीं, प्रेम पर आधारित होता है। बच्चे के सपने भी हर दिन बदलते रहते हैं। कभी वह कहता है कि बड़ा होकर पापा बनेगा, कभी शिक्षक बनेगा, कभी टॉफियां बेचने वाला भाई बनेगा। उसकी कल्पना सीमाओं में बंधी नहीं होती। वह हर दिन नई दुनिया रचता है और पिता उन सपनों पर मुस्कुराता रहता है। उसे पता होता है कि बच्चे का हर सपना उसके व्यक्तित्व की एक नई सीढ़ी है। इसी बीच समाज कठिन दौर से भी गुजरता है। भय, हिंसा और असुरक्षा का वातावरण बच्चे के मन पर भी असर डालता है। एक दिन सड़क पार करते समय छोटा-सा बेटा पिता का हाथ कसकर पकड़ लेता है और कहता है कि उसे डर लगता है। सड़क केवल सड़क नहीं रह जाती, वह उसके मन में भय का प्रतीक बन जाती है। पिता उसका हाथ थामकर उसे सुरक्षित दूसरी ओर ले जाता है। उस दिन बच्चा निडर होकर सड़क पार कर लेता है, क्योंकि उसे अपने पिता पर पूरा भरोसा होता है।

लेकिन समय का चक्र यहीं नहीं रुकता। वर्षों बाद वही बच्चा युवा हो जाता है। नौकरी करता है, जिम्मेदारियां निभाता है और पिता उम्र के उस पड़ाव पर पहुंच जाते हैं जहां कदम पहले जैसे तेज नहीं रह जाते। अब दृश्य बिल्कुल बदल चुका होता है। भीड़भाड़ वाली सड़क के किनारे पिता खड़े हैं और बेटा उन्हें बस अड्डे तक छोड़ने आया है। पिता आत्मविश्वास से कहते हैं कि वह स्वयं सड़क पार कर लेंगे। लेकिन बेटा बार-बार समझाता है कि किस काउंटर से टिकट लेना है, कौन-सी बस पकड़नी है और सावधानी से सड़क पार करनी है। यह वही बेटा है जो कभी बिना पिता का हाथ पकड़े सड़क पर कदम रखने से डरता था।

पिता सड़क पार करने के लिए आगे बढ़ते हैं, लेकिन तेज रफ्तार वाहनों के बीच उनका कदम ठिठक जाता है। उम्र अब शरीर पर अपना असर दिखा चुकी होती है। तभी पीछे से कंधे पर एक परिचित हाथ महसूस होता है। बेटा अपनी मोटरसाइकिल खड़ी करके वापस लौट आया है। वह कहता है कि देर हो जाएगी तो हो जाए, लेकिन वह पिता को सुरक्षित बस में बैठाकर ही जाएगा। वह पिता का बैग अपने कंधे पर उठा लेता है और उनका हाथ पकड़ लेता है।

उस क्षण सड़क केवल सड़क नहीं रहती। वह जीवन का प्रतीक बन जाती है। एक ओर बचपन की स्मृतियां हैं, दूसरी ओर वर्तमान की जिम्मेदारियां। पिता को अचानक लगता है कि उनके भीतर का छोटा-सा बच्चा फिर जाग गया है। अब वह निश्चिंत होकर बेटे का हाथ पकड़कर चल रहे हैं। जिस हाथ ने कभी बेटे को गिरने नहीं दिया था, आज उसी हाथ को सहारा बेटे ने दे दिया है। यह किसी हार का क्षण नहीं, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि का क्षण है। इससे बड़ा सम्मान किसी पिता के लिए क्या होगा कि उसका बेटा इतना संवेदनशील, जिम्मेदार और संस्कारी बन गया कि उसने अपने पिता की चिंता को अपनी जिम्मेदारी समझ लिया।

बार-बार के चुनावी भंवर से निकले देश

इस मानसून सत्र की दहलीज पर 'एक देश-एक चुनाव' को लेकर देश में जैसी बहस छिड़ी है, वैसी किसी अन्य सुधार पर लंबे समय से नहीं देखी गई। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं कि एक देश-एक चुनाव को लेकर कोई विधेयक संसद के इस सत्र में आएगा या नहीं, लेकिन यदि आता है तो उसे लेकर विरोध देखने को मिल सकता है, क्योंकि कई राजनीतिक दल एक साथ चुनाव के विचार को खारिज करते चले आ रहे हैं। मूल प्रश्न यह नहीं है कि देश में चुनाव कितनी बार होते हैं, बल्कि यह है कि चुनी हुई सरकारें जनता को कैसा शासन दे पाती हैं। यही वह बुनियादी आधार है, जिसके केंद्र में यह पूरा प्रस्ताव खड़ा है। वर्तमान में संसद की संयुक्त समिति संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024 को खंगाल रही है। पीपी चौधरी की अध्यक्षता में विभिन्न पक्षों से संवाद जारी है। इसे केवल चुनाव का कैलेंडर ठीक करने की यांत्रिक कसरत समझना भूल होगी। यह भारतीय शासन-व्यवस्था को बुनियादी तौर पर कसने और उसे नया स्वरूप देने का ऐतिहासिक अवसर है। एक साथ चुनाव लोकतंत्र का विकल्प नहीं, बल्कि हमारी चुनावी प्रक्रिया का अनिवार्य शोधन है। बीते एक दशक में शासन की रफ्तार, डिजिटल गवर्नेंस और बुनियादी ढांचे के निर्माण को जिस तरह नीति की निरंतरता से गति मिली है, उसी सिलसिले में इस सुधार का दस्तक देना स्वाभाविक है। भारतीय लोकतंत्र का सबसे बड़ा संकट यह है कि देश एक स्थायी चुनावी भंवर में फंस चुका है। पिछले पांच वर्षों का रिकार्ड गवाह है कि हर साल किसी न किसी बड़े राज्य में चुनावी मरोड़ उठती है और आचार संहिता का पहरा बैठ जाता है। नतीजा यह कि शासन का बड़ा हिस्सा रोजमर्रा के काम के बजाय चुनावी बंदोबस्त में होम हो जाता है। इसका सीधा असर सार्वजनिक निवेश और नीतिगत फैसलों पर पड़ता है। कोविंद समिति की रिपोर्ट ने साफ रेखांकित किया है कि इन बिखरी हुई चुनावी तारीखों के कारण देश प्रशासनिक और आर्थिक अनिश्चितता की भारी कीमत चुका रहा है। जैसे ही आचार संहिता लागू होती है, नई विकास योजनाएं, टेंडर और बड़े फैसले फाइलों में सिमट कर रह जाते हैं। बुनियादी ढांचे के बड़े प्रोजेक्ट्स को रफ्तार चाहिए, लेकिन बार-बार लगने वाला यह राजनीतिक ब्रेक उनकी लागत बढ़ाता है और समय लील जाता है।

देश का करदाता अपनी गाढ़ी कमाई से जिस प्रशासनिक तंत्र को विकास के लिए टैक्स देता है, वह भी मशीनरी महीनों चुनावी फेर में उलझी रहती है। इसकी सबसे करारी चोट हमारी शिक्षा व्यवस्था पर पड़ती है। चुनावों की घोषणा होते ही लाखों शिक्षकों और सुरक्षा बलों को उनके मूल दायित्वों से हटाकर ड्यूटी पर तैनात कर दिया जाता है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाई ठप हो जाती है। बच्चों के इस नुकसान की भरपाई कोई राजनीतिक दल नहीं कर सकता। लोकतंत्र का मतलब सिर्फ वोट डालना नहीं है। जनता को निर्बाध और सुचारु नागरिक जीवन मिलना ही इसकी असली कसौटी है। हम इसकी भी अनदेखी नहीं कर सकते कि किसी राज्य में चुनाव की घोषणा होते ही राजनीतिक दल अपनी प्राथमिकताएं बदलने को बाध्य हो जाते हैं।

यदि हम भारतीय चुनावी इतिहास को देखें तो 1951 से 1967 तक देश में एक साथ ही चुनाव होते थे। यह समकालिक व्यवस्था इसलिए समाप्त नहीं हुई कि वह नाकाम थी, बल्कि राजनीतिक अस्थिरता और समयपूर्व विघटनों के कारण उसका क्रम टूटा। इसलिए यह विचार किसी एक सरकार की तात्कालिक उपज नहीं है। चुनाव आयोग, विधि आयोग और संविधान समीक्षा आयोग वर्षों से इसे एक जरूरी सुधार के रूप में रेखांकित करते रहे हैं। स्वयं चुनाव आयोग आवश्यक संवैधानिक और प्रशासनिक तैयारी के साथ इसे संभव मानता है। ऐसे में यह बहस केवल राजनीतिक नफा-नुकसान की नहीं, देश की संस्थागत तत्परता की है। यह कोई नया या अनजाना प्रयोग नहीं है। यह भारतीय लोकतंत्र की मूल चुनावी व्यवस्था को आज की परिस्थितियों के अनुरूप पुनर्स्थापित करने का एक गंभीर प्रयास है। हालांकि इस सुधार के लिए आवश्यक संवैधानिक संशोधनों को लेकर कई तरह की आशंकाएं भी उठाई जा रही हैं। मुख्य विपक्षी दलों और क्षेत्रीय ताकतों का तर्क है कि एक साथ चुनाव होने से राष्ट्रीय मुद्दे प्रांतीय चुनावों पर हावी हो जाएंगे। उनका मानना है कि इससे स्थानीय सरोकार हाशिए पर चले जाएंगे और बहुदलीय ढांचा कमजोर पड़ सकता है। हालांकि हमारा चुनावी इतिहास यह दिखाता है कि भारतीय मतदाता कहीं अधिक परिपक्व है। यदि राष्ट्रीय मुद्दे स्थानीय मुद्दों को दबा देते तो अनेक राज्यों में मतदाता एक ही दिन लोकसभा और विधानसभा में अलग-अलग दलों को जनादेश क्यों देते? आखिर अब भी कई राज्यों के विधानसभा चुनाव लोकसभा के साथ होते हैं। हमारी जनता राष्ट्रीय और स्थानीय प्राथमिकताओं के फर्क को बखूबी समझती है। इसका सबसे कठिन हिस्सा इसके कानूनी पहलुओं से जुड़ा है। यदि कोई राज्य सरकार दो साल में ही गिर जाए या केंद्र में त्रिशंकु सदन की स्थिति बन जाए तो उस स्थिति में इस समकालिक चक्र को कैसे बचाया जाएगा? विधि आयोग और उच्चस्तरीय समिति के अनुसार, ऐसी स्थिति में होने वाले मध्यावधि चुनाव केवल पिछले सदन के बचे हुए कार्यकाल के लिए ही होने चाहिए। यह व्यवस्था व्यावहारिक रूप से कई गंभीर सवाल खड़े करती है। क्या मतदाता केवल दो साल के कार्यकाल के लिए फिर से मतदान करने के लिए तत्पर होंगे? असली चुनौती केवल एक बार साथ चुनाव कराने की नहीं है, बल्कि राजनीतिक अस्थिरता के बीच इस पूरी व्यवस्था को टिकाऊ बनाए रखने की है। वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' के वृहद राष्ट्रीय लक्ष्य को पूरा करने के लिए नीतियों की निरंतरता और प्रशासनिक स्थिरता सबसे पहली शर्त है। जब देश निरंतर चुनावी चक्रों के भंवर से मुक्त रहेगा, तभी हम बुनियादी ढांचे के निर्माण और बड़े आर्थिक सुधारों को सफलता से जमीन पर उतार पाएंगे। इसीलिए 'एक देश-एक चुनाव' को भी किसी दलगत राजनीति के चश्मे से देखने के स्थान पर इसे राष्ट्र-निर्माण के नजरिए से देखा जाना चाहिए। इसमें ही सबका हित है।

अभियान

सावन का पहला सोमवार बने जीवन का नया संकल्प : पहली बार व्रत रखने वाली महिलाएं पूजा के अंत में महादेव से करें यह दिव्य प्रार्थना

श्रावण मास को सनातन धर्म में भगवान शिव की आराधना का सबसे पवित्र और पुण्यदायी काल माना गया है। वर्ष भर आने वाले सभी महीनों में सावन का अपना अलग आध्यात्मिक महत्व है। मान्यता है कि इस पूरे महीने भगवान शिव अपने भक्तों की भक्ति से अत्यंत शीघ्र प्रसन्न होते हैं और सच्चे मन से की गई प्रार्थना को स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि सावन शुरू होते ही देशभर के शिव मंदिरों में भक्तों की लंबी कतारें दिखाई देने लगती हैं। कहीं कांवड़ यात्रा की धूम होती है, कहीं रुद्राभिषेक का आयोजन, तो कहीं महिलाएं और युवतियां पूरे विधि-विधान से सोमवार का व्रत रखकर भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद प्राप्त करने का संकल्प लेती हैं। विशेष रूप से जो महिलाएं पहली बार सावन सोमवार का व्रत शुरू करने जा रही हैं, उनके लिए यह केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन में अनुशासन, आत्मसंयम और आध्यात्मिक जागृति की नई शुरुआत भी मानी जाती है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस वर्ष सावन का महीना 30 जुलाई 2026 से प्रारंभ होकर 28 अगस्त 2026 तक रहेगा। इस पूरे मास में आने वाले प्रत्येक सोमवार का विशेष महत्व रहेगा। अनेक श्रद्धालु इसी समय सोलह सोमवार व्रत का भी संकल्प लेते हैं। एक बार संकल्प लेने के बाद लगातार 16 सोमवार तक व्रत रखा जाता है और सत्रहवें सोमवार को विधिपूर्वक उद्यापन किया जाता है। यह व्रत केवल मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए ही नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धि, संयम और ईश्वर के प्रति समर्पण का भी प्रतीक माना जाता है।

भगवान शिव को "भोलेनाथ", "महादेव", "आशुतोष" और "करुणामूर्ति" जैसे अनेक नामों से पुकारा जाता है। "आशुतोष" का अर्थ है—जो थोड़ी-सी सच्ची भक्ति से भी शीघ्र प्रसन्न हो जाएं। शिव की यही विशेषता उन्हें अन्य देवताओं से अलग बनाती है। उन्हें न स्वर्णाभूषणों की आवश्यकता है, न भव्य पूजा-पाठ की। केवल एक लोटा जल, कुछ बेलपत्र और निष्कपट श्रद्धा भी उन्हें प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त मानी गई है। यही कारण है कि भगवान शिव की पूजा समाज के हर वर्ग के लिए समान रूप से सुलभ मानी जाती है। यदि आप पहली बार सावन सोमवार का व्रत रख रही हैं, तो सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि व्रत केवल भोजन का त्याग नहीं है। "व्रत" का वास्तविक अर्थ है—एक श्रेष्ठ संकल्प। ऐसा संकल्प जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, व्यवहार और जीवनशैली को भी पवित्र बनाने का प्रयास करे। इसलिए इस दिन केवल फलाहार करना ही पर्याप्त नहीं माना जाता, बल्कि क्रोध, अहंकार, कटु वाणी, ईर्ष्या, छल और असत्य से भी दूर रहने का प्रयास करना चाहिए। धर्मग्रंथों के अनुसार बाहरी उपवास तभी सार्थक माना जाता है, जब मन भी सात्विक बना रहे।

सावन सोमवार के दिन प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। यदि संभव हो तो सफेद, पीले या हल्के रंग के वस्त्र पहनना शुभ माना जाता है। इसके बाद भगवान शिव का स्मरण करते हुए व्रत का संकल्प लें। पूजा स्थल को स्वच्छ रखें और दीपक प्रज्वलित करें। शिवलिंग पर सर्वप्रथम गंगाजल या स्वच्छ जल अर्पित करें। इसके बाद दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से पंचामृत अभिषेक किया जा सकता है। पुनः जल से स्नान कराकर भगवान शिव को बेलपत्र, धतूरा, भांग, आक के पुष्प, चंदन, अक्षत और मौसमी फल अर्पित करें। बेलपत्र चढ़ाते समय यह ध्यान रखें कि उसकी तीनों पत्तियां पूर्ण हों और उस पर किसी प्रकार का छेद या कटाव न हो।

शिव पूजा के दौरान "ॐ नमः शिवाय" मंत्र का जाप अत्यंत फलदायी माना गया है। यह पंचाक्षरी मंत्र शिव उपासना का मूल मंत्र माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि इस मंत्र के नियमित जाप से मन की अशांति दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इसके अतिरिक्त महामृत्युंजय मंत्र, शिव चालीसा, रुद्राष्टक, शिव तांडव स्तोत्र या शिव महिम्न स्तोत्र का पाठ भी श्रद्धा के साथ किया जा सकता है।

लेकिन पूजा का सबसे महत्वपूर्ण भाग तब माना जाता है, जब भक्त भगवान शिव के समक्ष अपनी भूलों के लिए क्षमा याचना करता है। अनेक धार्मिक परंपराओं में पूजा के अंत में यह प्रार्थना अवश्य करने की सलाह दी जाती है—

यत् कृतं तु मया देव पापं जन्मान्तरार्जितम्।
क्षन्तव्यं तत् महादेव प्रसीद परमेश्वर।।

इस श्लोक का भावार्थ है—"हे महादेव! मुझसे इस जन्म अथवा पूर्व जन्मों में जो भी ज्ञात-अज्ञात पाप हुए हैं, उनके लिए मैं आपसे क्षमा मांगती हूं। हे परमेश्वर! मुझ पर अपनी कृपा बनाए रखें, मेरे जीवन को सद्बुद्धि, सदाचार और धर्म के मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें।"

धार्मिक दृष्टि से यह प्रार्थना अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गई है क्योंकि भगवान के समक्ष अपनी भूल स्वीकार करना विनम्रता का प्रतीक है। पूजा केवल इच्छाएं मांगने का माध्यम नहीं है, बल्कि आत्ममंथन का भी अवसर है। जब व्यक्ति अपने दोषों को स्वीकार करता है, तभी उसके भीतर वास्तविक आध्यात्मिक परिवर्तन प्रारंभ होता है।

सोलह सोमवार व्रत के संबंध में प्रचलित मान्यता है कि जो अविवाहित कन्याएं श्रद्धापूर्वक यह व्रत करती हैं, उन्हें योग्य जीवनसाथी की प्राप्ति होती है। यह विश्वास माता पार्वती की तपस्या से जुड़ा हुआ है। पौराणिक कथाओं के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तप किया था। उनकी अटूट भक्ति और समर्पण से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें स्वीकार किया। इसलिए आज भी अनेक युवतियां भगवान शिव और माता पार्वती की संयुक्त पूजा कर सुखी वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद मांगती हैं।

विवाहित महिलाएं भी इस व्रत को अत्यंत श्रद्धा से करती हैं। वे अपने पति के उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, पारिवारिक सुख-शांति, संतान की उन्नति और दांपत्य जीवन में प्रेम एवं विश्वास की कामना करती हैं। हालांकि यह व्रत केवल महिलाओं तक सीमित नहीं है। पुरुष भी भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने, मानसिक शांति, आध्यात्मिक उन्नति और जीवन की बाधाओं को दूर करने के उद्देश्य से यह व्रत कर सकते हैं।

सावन के सोमवार का एक महत्वपूर्ण संदेश दान और सेवा भी है। धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि व्रत तभी पूर्ण माना जाता है जब उसके साथ सेवा और दया का भाव भी जुड़ा हो। अपनी सामर्थ्य के अनुसार अन्नदान, वस्त्रदान, गौसेवा, पक्षियों के लिए जल की व्यवस्था, गरीबों की सहायता या वृक्षारोपण जैसे कार्य करना अत्यंत पुण्यदायी माना गया है। भगवान शिव स्वयं प्रकृति के देवता माने जाते हैं। उनके मस्तक पर गंगा, जटाओं में चंद्रमा, गले में सर्प और वाहन के रूप में नंदी का होना इस बात का प्रतीक है कि समस्त सृष्टि उनके लिए समान है। इसलिए प्रकृति की रक्षा करना भी शिवभक्ति का ही एक स्वरूप माना गया है।

व्रत के दौरान खान-पान में सात्विकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि स्वास्थ्य अनुमति देता हो तो फलाहार किया जा सकता है। जिन लोगों को चिकित्सकीय कारणों से उपवास करना संभव न हो, वे सामान्य सात्विक भोजन ग्रहण करते हुए भी श्रद्धापूर्वक भगवान शिव की पूजा कर सकते हैं। सनातन धर्म में शरीर को ईश्वर का मंदिर माना गया है, इसलिए स्वास्थ्य की उपेक्षा करना धर्मसम्मत नहीं माना जाता।

सावन का महीना हमें भगवान शिव के व्यक्तित्व से भी बहुत कुछ सीखने की प्रेरणा देता है। शिव त्याग के प्रतीक हैं, क्योंकि उन्होंने समुद्र मंथन से निकला विष स्वयं पी लिया ताकि संसार की रक्षा हो सके। वे सरलता के प्रतीक हैं क्योंकि राजसी वैभव के बजाय कैलाश की तपोभूमि को अपना निवास बनाया। वे समानता के प्रतीक हैं क्योंकि उनके द्वार पर देव, दानव, पशु, पक्षी, ऋषि, योगी और सामान्य जन—सभी बिना भेदभाव के पहुंचते हैं। वे करुणा के प्रतीक हैं क्योंकि वे अपने भक्तों की छोटी-सी भक्ति को भी स्वीकार कर लेते हैं।

यही कारण है कि सावन का व्रत केवल इच्छापूर्ति का साधन नहीं, बल्कि जीवन को बेहतर बनाने का अवसर भी है। यदि इस महीने व्यक्ति अपने भीतर धैर्य, क्षमा, सेवा, सत्य, संयम और करुणा जैसे गुण विकसित करने का प्रयास करे, तो वही भगवान शिव की सच्ची आराधना कहलाएगी।

जो महिलाएं इस वर्ष पहली बार सावन सोमवार का व्रत प्रारंभ करने जा रही हैं, उन्हें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पूजा में दिखावा नहीं, बल्कि श्रद्धा सबसे महत्वपूर्ण है। यदि किसी कारणवश सभी पूजन सामग्री उपलब्ध न हो, तब भी सच्चे मन से जल अर्पित कर "ॐ नमः शिवाय" का जप करना और अंत में भगवान शिव के समक्ष क्षमा प्रार्थना करना अत्यंत शुभ माना गया है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

सूरत में मानसून का जोरदार आगाज़, रविवार सुबह मूसलाधार बारिश से शहर थमा; दो इंच वर्षा में कई इलाके जलमग्न, उधना गरनाला बना तालाब

सूरत। गुजरात की आर्थिक राजधानी और देश के प्रमुख औद्योगिक शहरों में शामिल सूरत में रविवार तड़के मानसून ने अचानक रौद्र रूप दिखाया। सुबह करीब पांच बजे से शुरू हुई मूसलाधार बारिश ने कुछ ही घंटों में पूरे शहर की रफ्तार पर ब्रेक लगा दिया। लगातार तेज बारिश के कारण कई इलाकों में दो इंच से अधिक वर्षा दर्ज की गई, जिसके चलते शहर के अनेक निचले क्षेत्रों में जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो गई। सड़कों पर पानी भर जाने से यातायात प्रभावित हुआ, कई स्थानों पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और सुबह अपने काम पर निकलने वाले लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। बारिश का सबसे अधिक असर उधना, नवसारी रोड, रेलवे स्टेशन क्षेत्र और अन्य संवेदनशील इलाकों में देखने को मिला, जहां कुछ समय के लिए सामान्य जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया।

रविवार होने के बावजूद सुबह से ही कई लोग काम, यात्रा और अन्य आवश्यक कार्यों के लिए घरों से निकले थे, लेकिन तेज बारिश ने उनकी मुश्किलें बढ़ा दीं। कुछ ही समय में सड़कों पर पानी भर गया और कई स्थानों पर वाहन रेंगते हुए नजर आए। दोपहिया वाहन चालकों को विशेष रूप से कठिनाई का सामना करना पड़ा, जबकि पैदल यात्रियों को घुटनों तक भरे पानी के बीच से गुजरना पड़ा।

भारी बारिश का सबसे अधिक प्रभाव उधना रेलवे स्टेशन के समीप स्थित गरनाला में देखने को मिला। यहां कुछ ही देर में घुटनों तक पानी भर गया, जिससे सड़क पूरी तरह जलमग्न हो गई। अंडरपास में पानी जमा होने के कारण कई वाहन बीच रास्ते में फंस गए। कुछ वाहन चालकों को अपने वाहन धक्का लगाकर बाहर निकालने पड़े, जबकि कई लोगों ने वैकल्पिक मार्गों का सहारा लिया। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि हर वर्ष मानसून के दौरान इस स्थान पर यही स्थिति बनती है, लेकिन अब तक जलनिकासी की स्थायी व्यवस्था नहीं हो सकी है।

बारिश के कारण शहर के कई अन्य निचले इलाकों में भी सड़कें तालाब जैसी दिखाई देने लगीं। आवासीय क्षेत्रों, बाजारों और व्यस्त मार्गों पर पानी भर जाने से लोगों की आवाजाही प्रभावित हुई। कई दुकानदारों ने दुकानों के बाहर जमा पानी हटाने की कोशिश की, जबकि कुछ स्थानों पर लोगों को अपने घरों और प्रतिष्ठानों में पानी घुसने की आशंका भी बनी रही।

उधना-नवसारी रोड, जो शहर का अत्यंत व्यस्त यातायात मार्ग माना जाता है, वहां भी जलभराव के कारण वाहनों की गति काफी धीमी हो गई। कुछ समय के लिए लंबा ट्रैफिक जाम लग गया और लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में सामान्य

दिनों की तुलना में अधिक समय लगा। बारिश के दौरान दृश्यता कम होने के कारण वाहन चालक भी बेहद सावधानी के साथ वाहन चलाते दिखाई दिए।

स्थानीय नागरिकों ने एक बार फिर नगर प्रशासन की प्री-मानसून तैयारियों पर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि हर वर्ष मानसून शुरू होने से पहले नालों की सफाई, जलनिकासी व्यवस्था मजबूत करने और संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष प्रबंध किए जाने के दावे किए जाते हैं, लेकिन पहली ही तेज बारिश में कई इलाके जलमग्न हो जाते हैं। लोगों का कहना है कि यदि सामान्य से कुछ अधिक बारिश में ही शहर की प्रमुख सड़कें पानी में डूब जाती हैं, तो यह ड्रेनेज सिस्टम की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है। व्यापारियों का कहना है कि जलभराव केवल यातायात की समस्या नहीं है, बल्कि इससे व्यापार भी प्रभावित होता है। कई बाजार क्षेत्रों में ग्राहकों की आवाजाही कम हो जाती है और दुकानों के सामने पानी भरने से कारोबार पर असर पड़ता है। वहीं कार्यालय जाने वाले कर्मचारियों और विद्यार्थियों को भी भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। मौसम विभाग के अनुसार, क्षेत्र में सक्रिय मानसूनी प्रणाली और अनुकूल मौसमी परिस्थितियों के कारण दक्षिण गुजरात में बारिश की गतिविधियां तेज हुई हैं। विभाग ने आने वाले दिनों में भी हल्की से मध्यम तथा कुछ स्थानों पर भारी बारिश की संभावना जताई है। ऐसे में निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को सतर्क रहने और अनावश्यक रूप से जलभराव वाले क्षेत्रों में जाने से बचने की सलाह दी गई है।

बारिश के दौरान नगर निगम और प्रशासन की टीमें भी सक्रिय रहीं। जलभराव वाले क्षेत्रों में पानी की निकासी तेज करने के लिए पंपों की सहायता ली गई तथा संबंधित अधिकारियों को संवेदनशील स्थानों की लगातार निगरानी करने के निर्देश दिए गए। जहां-जहां पानी का स्तर अधिक था, वहां यातायात को नियंत्रित करने के लिए भी आवश्यक व्यवस्थाएं की गईं ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना न हो। हालांकि बारिश थमने के बाद कई इलाकों में धीरे-धीरे पानी उतरना शुरू हो गया, जिससे लोगों और प्रशासन ने राहत की सांस ली। इसके बावजूद नागरिकों का कहना है कि हर वर्ष मानसून में एक जैसी स्थिति दोहराई जाना चिंता का विषय है और अब अस्थायी उपायों के बजाय स्थायी समाधान की आवश्यकता है। विशेषज्ञों का भी मानना है कि तेजी से हो रहे शहरी विकास, बढ़ते कंक्रीटीकरण और जलनिकासी तंत्र पर बढ़ते दबाव को देखते हुए शहर में आधुनिक स्टॉर्म वॉटर ड्रेनेज सिस्टम विकसित करना समय की मांग है। फिलहाल प्रशासन पूरे शहर की स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है। मौसम विभाग की आगामी चेतावनियों को देखते हुए नगर निगम ने संबंधित विभागों को अलर्ट रहने के निर्देश दिए हैं। यदि अगले कुछ दिनों तक इसी तरह तेज बारिश का सिलसिला जारी रहता है तो जलभराव की समस्या और बढ़ सकती है। ऐसे में प्रशासन के सामने चुनौती होगी कि वह शहर के संवेदनशील इलाकों में जलनिकासी व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखे और आम नागरिकों को कम से कम असुविधा का सामना करना पड़े।

राज्य के 7 औषधीय उद्यानों से 2.75 लाख औषधीय पौधों का निःशुल्क वितरण

▸▸ किसानों को सब्सिडी, विद्यार्थियों के लिए अनुसंधान की जीवंत प्रयोगशाला बने उद्यान

▸▸ राज्य में 7 औषधीय उद्यान कार्यरत : गांधीनगर, वाँसदा (रूपवेल), भुज (नानी रेलडी), राजपीपळा (जीतनगर), झालोद (वरोड), पालनपुर (वशी-दाँता) और आहवा-सापुतारा

गांधीनगर : गुजरात में आयुर्वेदिक परंपरा तथा नागरिकों में स्वस्थ जीवनशैली को पोषित करने के लिए गुजरात औषधीय वनस्पति बोर्ड ने वर्ष 2025-26 के दौरान राज्य के सात सरकारी औषधीय उद्यानों से 2.75 लाख से अधिक औषधीय पौधों का निःशुल्क वितरण किया है। बोर्ड व्यक्तिगत उपयोग के लिए 10, स्कूलों-संस्थाओं को 50 तथा किसानों एवं सार्वजनिक भूमि के लिए 500 रुपए तक के पौधे निःशुल्क देता है। गांधीनगर उद्यान से चंदन के पौधे मात्र 20 रुपए की सब्सिडी युक्त दर पर उपलब्ध कराए जाते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन और स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल पानशेरिया के नेतृत्व में कार्यरत ये उद्यान केवल पौधों के संवर्धन के केन्द्र ही नहीं, बल्कि आयुर्वेदिक ज्ञान के केन्द्र के रूप में भी विकसित हुए हैं। प्रतिवर्ष लगभग 20 हजार विद्यार्थी, शोधकर्ता और आयुर्वेद के अध्ययनकर्ता यहाँ का दौरा कर औषधीय वनस्पतियों का प्रत्यक्ष अध्ययन करते हैं।

वर्ष 2002 में 'न लाभ, न हानि' के आधार पर स्थापित गुजरात औषधीय वनस्पति बोर्ड

का मुख्य उद्देश्य आयुर्वेदिक फार्मेसियों तथा परंपरागत उपचार पद्धति के लिए गुणवत्तायुक्त औषधीय वनस्पतियाँ उपलब्ध कराना है। बोर्ड घरेलू उपचार के संबंध में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ किसानों को औषधीय फसलों की व्यावसायिक खेती के लिए सब्सिडी भी देता है।

बोर्ड द्वारा बाजार की मांग को ध्यान में रखकर अधिक लाभदायक औषधीय फसलों की पहचान, जंगलों में औषधीय वनस्पतियों का विस्तार, एनजीओ के सहयोग से हरियाली अभियान तथा विश्वविद्यालयों के साथ अनुसंधान जैसे कार्यक्रम भी किए जाते हैं।

हाल में बोर्ड के सात सरकारी उद्यान गांधीनगर, वाँसदा (रूपवेल), भुज (नानी रेलडी), राजपीपळा (जीतनगर), झालोद (वरोड), पालनपुर (वशी-दाँता) तथा आहवा-सापुतारा में कार्यरत हैं। यहाँ तुलसी, गिलोय, अडूसा, शतावरी, अश्वगंधा, ब्राह्मी, लिंडी पीपर तथा हरड़ सहित विभिन्न औषधीय वनस्पतियों का संवर्धन किया जाता है तथा उनका अनुसंधान एवं निःशुल्क वितरण किया जाता है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अहमदाबाद में वाइब्रेंट इंडिया स्टेनलेस स्टील एग्जीबिशन-2026 देखने पहुँचे

▸▸ मुख्यमंत्री स्टेनलेस स्टील के नए प्रोडक्ट्स तथा होम अप्लायंसेज क्षेत्र में हो रहे आधुनिक अनुसंधानों के वैश्विक परिप्रेक्ष्य से अवगत हुए

▸▸ किचनवेयर, क्रॉकरी तथा होम अप्लायंसेज उद्योग की बीटूबी ट्रेड प्रदर्शनी में देशभर से 100 से अधिक स्टॉलधारक सहभागी हुए

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल रविवार को अहमदाबाद में गुजरात यूनिवर्सिटी कन्वेंशन हॉल में आयोजित वाइब्रेंट इंडिया स्टेनलेस स्टील एग्जीबिशन-2026 देखने के लिए पहुँचे। श्री पटेल ने प्रदर्शनी के विभिन्न स्टॉल्स पर जाकर देशभर से आए प्रदर्शकों, उत्पादकों एवं उद्यमियों से उनके उत्पादों के में बारे में जानकारी प्राप्त की और उनका उत्साह बढ़ाया। इस बीटूबी ट्रेड एग्जीबिशन में देश के विभिन्न राज्यों से किचनवेयर, क्रॉकरी तथा होम अप्लायंसेज उद्योग के लगभग 100 से अधिक अग्रणी उत्पादक सहभागी हुए हैं।

मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी प्रस्तुत नए उत्पादों और होम अप्लायंसेज क्षेत्र में हो रहे आधुनिक अनुसंधानों का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया और वे वैश्विक परिप्रेक्ष्य से अवगत हुए।

इस प्रदर्शनी का उद्देश्य भारत के स्टेनलेस स्टील उद्योग को मजबूत, स्मार्ट तथा आत्मनिर्भर बनाकर एक वैश्विक उत्पादन केन्द्र बनाना है। इसमें इनोवेशन, ग्रीन

स्टील टेक्नोलॉजी, एमएसएमई को समर्थन, निर्यात में वृद्धि और रोजगार सृजन जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर विशेष बल दिया गया है।

उल्लेखनीय है कि 20 जुलाई तक चलने वाली इस चार दिवसीय प्रदर्शनी में देश-विदेश से 500 से अधिक प्रतिष्ठित ब्रांड्स के उत्पाद प्रदर्शित किए गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप देशभर के ट्रेड विजिटर्स द्वारा बड़े पैमाने पर बल्क ऑर्डर एवं बिजनेस नेटवर्किंग के अवसर सृजित हुए हैं।

इस अवसर पर सर्वश्री योगेशभाई अग्रवाल, जयंतीलाल सरधारा, अशोक भणसाली, प्रकाश संघवी, नरेन्द्र दिवाकर, दिनेश सेन, दिव्यांश अग्रवाल सहित विभिन्न अग्रणी स्टील मैन्युफैक्चरिंग कंपनी प्रतिनिधि और रिटेलर्स उपस्थित रहे।

सामाख्याली-गांधीधाम रेलखंड पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनों के टर्मिनल स्टेशन में अस्थायी परिवर्तन

पश्चिम रेलवे अहमदाबाद मंडल के सामाख्याली,वोंध एवं भचाऊ स्टेशनों के बीच चौहरिकरण (Quadrupling) एवं औटोमेटिक सिग्नलिंग परियोजना के कमीशनिंग के संबंध में नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य हेतु ब्लॉक लिया जा रहा है। इस कार्य के कारण कुछ ट्रेनों के टर्मिनल स्टेशन में अस्थायी परिवर्तन किया गया है। विवरण निम्नानुसार है :

1. गाड़ी संख्या 22483 भगत की कोठी-गांधीधाम एक्सप्रेस 28 जुलाई 2026 से 03 अगस्त 2026 तक भीलड़ी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा भीलड़ी-गांधीधाम के बीच निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 22484 गांधीधाम-भगत की कोठी एक्सप्रेस 29 जुलाई 2026 से 04 अगस्त 2026 तक भीलड़ी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट (प्रारंभ) होगी तथा गांधीधाम-भीलड़ी के बीच निरस्त रहेगी।

2. गाड़ी संख्या 19404 दिल्ली-भुज एक्सप्रेस 24 जुलाई 2026 से 02 अगस्त 2026 तक भीलड़ी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा भीलड़ी-भुज के बीच निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 19403 भुज-दिल्ली एक्सप्रेस 26 जुलाई 2026 से 04 अगस्त 2026 तक भीलड़ी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट (प्रारंभ) होगी तथा भुज-भीलड़ी के बीच निरस्त रहेगी।

3. गाड़ी संख्या 20984 दिल्ली सराय रोहिल्ला-भुज एक्सप्रेस 29 जुलाई 2026 और 01 अगस्त 2026 को भीलड़ी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा भीलड़ी-भुज के बीच निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 20983 भुज-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस 31 जुलाई 2026 और 04 अगस्त 2026 को भीलड़ी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट (प्रारंभ) होगी तथा भुज-भीलड़ी के बीच निरस्त रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे यात्रा से पूर्व ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य अद्यतन जानकारी के लिए रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

तेंदुओं जैसे वन्यजीवों को जंगल में प्राकृतिक शिकार उपलब्ध कराने के लिए सूरत के जंगलों में 50 चीतल छोड़े गए

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हमेशा इस बात पर बल दिया है कि वन्यजीव संरक्षण तथा विकास; दोनों साथ-साथ चल सकते हैं और मनुष्य तथा वन्यजीव; दोनों एक साथ समृद्ध होने चाहिए। इस विजन से प्रेरित होकर गुजरात सरकार जैवविविधता के संरक्षण के साथ मानव-वन्यजीव के सह-अस्तित्व को प्रोत्साहन देने के लिए विज्ञान आधारित वन संरक्षण पहलों को लागू कर रही है।

▸▸ "मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात वन विभाग मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने के लिए विज्ञान आधारित विभिन्न संरक्षण उपाय लागू कर रहा है। वन्यजीवों के प्राकृतिक आवासों में उनके शिकार आधार (प्रे-बेस) को मजबूत करना इस रणनीति का एक प्रमुख हिस्सा है।" - श्री अर्जुन मोढवाडिया, वन एवं पर्यावरण मंत्री, गुजरात

गांधीनगर : तेंदुओं जैसे वन्यजीवों को जंगल में उनका प्राकृतिक भोजन उपलब्ध हो तथा मनुष्यों व वन्यजीवन के बीच संघर्ष कम हो; इस उद्देश्य से सूरत वन विभाग द्वारा हाल ही में मांडवी के जंगलों में तृणाहारी वन्यजीवों को छोड़ा गया है।

गुजरात वन विभाग द्वारा हाल ही में सासणगिर से 50 चीतल (स्पॉटेड डियर) लाकर सूरत जिले के मांडवी के जंगलों में छोड़े गए हैं। इस पहल का उद्देश्य तेंदुओं जैसे वन्यजीवों को जंगल में प्राकृतिक शिकार उपलब्ध कराना तथा इस प्रकार जंगल में जैवविविधता बढ़ाना है।

वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार यह स्थानांतरण इस वर्ष मई एवं जून माह के बीच तीन चरणों में किया गया। वन विभाग द्वारा 23 मई को 21 चीतल, उसके बाद चीतल जंगल में छोड़े गए। इस प्रकार कुल 50 चीतलों को जंगल में छोड़ा गया।

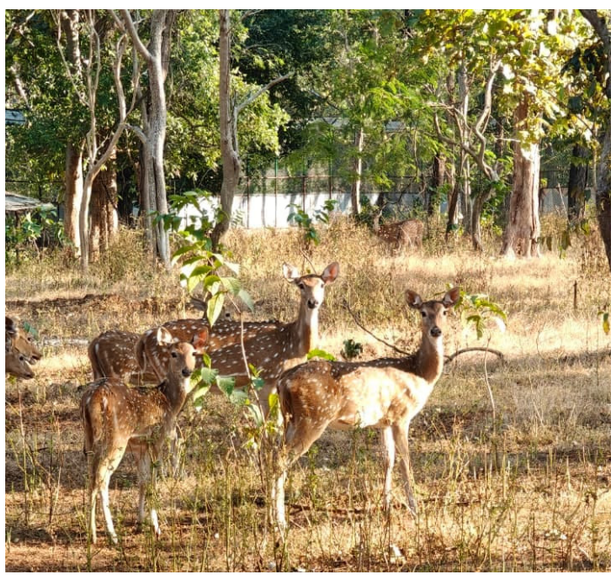

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हमेशा इस बात पर बल दिया है कि वन्यजीव संरक्षण तथा विकास; दोनों साथ-साथ चल सकते हैं और मनुष्य तथा वन्यजीव; दोनों एक साथ समृद्ध होने चाहिए। इसी विजन से प्रेरित होकर गुजरात सरकार जैवविविधता के संरक्षण के साथ मानव-वन्यजीव के सह-अस्तित्व को प्रोत्साहन देने के लिए विज्ञान आधारित वन संरक्षण पहलों को लागू कर रही है।

गुजरात के वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा, "मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात वन विभाग मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने के लिए विज्ञान आधारित रहा है। जंगल में तेंदुओं जैसे वन्यजीवों के लिए प्राकृतिक शिकार उपलब्ध रहे; इसके लिए ये प्रयास किए जा रहे हैं। वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के अंतर्गत किया गया यह स्थानांतरण उपयुक्त वन क्षेत्रों में तृणाहारी वन्यजीवों की आबादी बढ़ाकर पर्यावरणीय संतुलन को पुनर्स्थापित करने के राज्य के दीर्घकालीन प्रयासों का एक हिस्सा है।"

वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री प्रवीण माली ने कहा, "शिकारी (शिकार करने वाले) वन्यजीवों को उनका भोजन जंगल में ही उपलब्ध हो; यह आवश्यक है, जिससे भोजन की खोज में उनके मानव बस्तियों की ओर आने की घटनाएँ कम हों। का यह प्रयास मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।"

प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) एवं चीफ वाइल्डलाइफ वार्डन श्री जयपाल सिंह ने कहा, "यह पहल मांडवी वन रेंज में पहले किए गए संरक्षण कार्यों को आगे बढ़ाती है। वन विभाग ने स्थानीय तृणाहारी वन्यजीवों की संख्या बढ़ाने के लिए एक चीतल प्रजनन केन्द्र (ब्रीडिंग सेंटर) स्थापित किया है।"

सूरत सर्कल के वन संरक्षक श्री पुनीत नैय्यर ने कहा, "मानव-वन्यजीव संघर्ष के समय त्वरित कार्रवाई के लिए वन विभाग ने आधुनिक रेस्क्यू उपकरणों से टीम (क्यूआरटी) भी तैनात की है, जिससे वन्यजीव संबंधी आपात स्थिति के समय तत्काल कार्रवाई की जा सके और स्थानीय समुदायों एवं वन्यजीवों; दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।"

श्री पुनीत नैय्यर ने जोड़ा कि चीतलों को सासण (गिर) से सूरत के जंगलों में लाने से पहले ऐसे स्थानों की पहचान करने के लिए विस्तृत आवासीय मूल्यांकन किया गया था, जो छोड़े जाने वाले वन्यजीवों को लंबे समय तक आश्रय प्रदान कर सकें। इन हिरणों के लिए पूरे वर्ष पानी उपलब्ध रहे; इसकी भी व्यवस्था की गई है। हिरणों के लिए जंगल में 10 स्थायी वाटर प्वॉइंट (जल स्रोत) विकसित किए गए हैं।

वन विभाग ने वन्यजीवों को जंगल में छोड़ने के बाद उनकी सघन निगरानी (पोस्ट-रिलीज मॉनिटरिंग) के लिए एक विशेष कार्यक्रम भी तैयार किया है। समर्पित वन रक्षक (फॉरेस्ट गार्ड्स) और प्रशिक्षित ट्रैकर्स लगातार फील्ड मॉनिटरिंग कर रहे हैं, जबकि हिरणों की आवाजाही, आवास के उपयोग, उनके स्वास्थ्य तथा जंगल में उनके अस्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए रणनीतिक स्थानों पर कैमरा ट्रैप लगाए गए हैं।

वन अधिकारियों ने बताया कि यह पहल सूरत वन विभाग द्वारा पर्यावरणीय स्थितिस्थापकता को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। विज्ञान आधारित वन्यजीव प्रबंधन द्वारा प्राकृतिक शिकार के आधार को को सुदृढ़ करके विभाग का उद्देश्य जैवविविधता संरक्षण को प्रोत्साहन देना तथा दक्षिण गुजरात में दीर्घकालिक मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने में योगदान देना है।

मजबूत डॉलर और वैश्विक अनिश्चितताओं से सोना-चांदी पर बढ़ा दबाव, अगले सप्ताह निवेशकों की नजर फेड और पश्चिम एशिया के घटनाक्रम पर

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में मजबूत होते अमेरिकी डॉलर, पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, कच्चे तेल की ऊंची कीमतों और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच सोने और चांदी की कीमतों पर दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। पिछले सप्ताह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में कीमती धातुओं में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले सप्ताह में भी बाजार की दिशा मुख्य रूप से अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों, फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति, यूरोप और चीन के केंद्रीय बैंकों के रुख तथा पश्चिम एशिया की स्थिति पर निर्भर करेगी।

बाजार विश्लेषकों के अनुसार, सुरक्षित निवेश (सेफ हेवन) के रूप में सोने की मांग भू-राजनीतिक तनाव के कारण बनी हुई है, लेकिन दूसरी ओर मजबूत डॉलर और लंबे समय तक ऊंची ब्याज दरें बने रहने की आशंका ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया है। यही कारण है कि सोने और चांदी में नई खरीदारी की गति कमजोर पड़ी है और निवेशक फिलहाल सतर्क रुख अपनाए हुए हैं।

जेएम फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के जिंस एवं मुद्रा शोध प्रमुख प्रणव मेर का कहना है कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व की आगामी बैठक से पहले बाजार में अनिश्चितता बनी हुई है। निवेशक यह जानना चाहते हैं कि अमेरिकी केंद्रीय बैंक भविष्य में ब्याज दरों को लेकर क्या संकेत देता है। उनके अनुसार, फेड की सख्त मौद्रिक नीति और मजबूत डॉलर सोने की कीमतों पर दबाव बनाए हुए हैं, हालांकि अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ता तनाव कभी भी बाजार की दिशा बदल सकता है। यदि भू-राजनीतिक स्थिति और अधिक गंभीर होती है तो सुरक्षित निवेश के रूप में सोने की मांग फिर बढ़ सकती है।

पिछले सप्ताह मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना वायदा 2,572 रुपये, यानी लगभग दो प्रतिशत की गिरावट के साथ 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। इसी तरह सितंबर डिलीवरी वाली चांदी में भी तेज बिकवाली देखने को मिली। चांदी का वायदा भाव 6,261 रुपये यानी करीब 2.8 प्रतिशत टूटकर 2.16 लाख रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गया।

विशेषज्ञों का कहना है कि हाल के दिनों में निवेशकों ने नई खरीदारी के बजाय मुनाफावसूली को प्राथमिकता दी है। पिछले कुछ महीनों में सोने और चांदी की कीमतों में लगातार तेजी के बाद कई निवेशकों ने ऊंचे स्तर पर अपने निवेश से लाभ निकालना उचित समझा, जिससे बाजार में बिकवाली का दबाव बढ़ गया।

एलकेपी सिक्योरिटीज के विश्लेषक जतिन त्रिवेदी के अनुसार, अमेरिकी डॉलर की मजबूती, कच्चे तेल की लगातार बढ़ती कीमतें और ब्याज दरों के लंबे समय तक ऊंचे बने रहने की संभावना ने निवेशकों का रुख बदल दिया है। उन्होंने कहा कि जब डॉलर मजबूत होता है तो अन्य मुद्राओं में सोना अपेक्षाकृत महंगा हो जाता है, जिससे इसकी वैश्विक मांग प्रभावित होती है। इसी कारण अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट दर्ज की गई है। वैश्विक बाजारों की बात करें तो कॉमेक्स पर सोना वायदा लगभग 2.3 प्रतिशत गिरकर 4,018.8 डॉलर प्रति औंस पर बंद हुआ। वहीं न्यूयॉर्क बाजार में चांदी की कीमतों में और अधिक दबाव देखने को मिला। चांदी लगभग 6.4 प्रतिशत टूटकर 56.32 डॉलर प्रति औंस पर आ गई। यह गिरावट इस बात का संकेत है कि निवेशक फिलहाल जोखिम लेने के बजाय प्रमुख आर्थिक संकेतकों का इंतजार कर रहे हैं।

बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि आने वाले दिनों में कई महत्वपूर्ण आर्थिक घटनाक्रम निवेशकों की रणनीति तय करेंगे। अमेरिका से जारी होने वाले महंगाई, रोजगार और आर्थिक वृद्धि से जुड़े आंकड़े यह संकेत देंगे कि फेडरल रिजर्व आगे ब्याज दरों को लेकर क्या रुख अपना सकता है। यदि अमेरिकी अर्थव्यवस्था अपेक्षा से अधिक मजबूत रहती है तो ब्याज दरों में कटौती की संभावना और कमजोर हो सकती है, जिसका असर सोने और चांदी की कीमतों पर पड़ सकता है।

इसके साथ ही यूरोप और चीन के केंद्रीय बैंकों की मौद्रिक नीति पर भी बाजार की नजर बनी रहेगी। चीन दुनिया के सबसे बड़े सोना और औद्योगिक धातु उपभोक्ताओं में शामिल है। वहां की आर्थिक गतिविधियों और प्रोत्साहन उपायों का असर चांदी सहित कई धातुओं की मांग पर पड़ सकता है। दूसरी ओर, पश्चिम एशिया में जारी भू-राजनीतिक तनाव भी बाजार के लिए महत्वपूर्ण कारक बना हुआ है। यदि क्षेत्र में तनाव और बढ़ता है या ऊर्जा आपूर्ति प्रभावित होती है तो वैश्विक वित्तीय बाजारों में अस्थिरता बढ़ सकती है। ऐसी स्थिति में निवेशक फिर से सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख कर सकते हैं, जिससे सोने की मांग में तेजी आने की संभावना बन सकती है। विश्लेषकों का मानना है कि फिलहाल सोने और चांदी का बाजार दो विपरीत कारकों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रहा है।

स्कूली विवाद ने लिया हिंसक रूप, ट्यूशन जा रही दो बहनों पर परिवार समेत हमला; सीसीटीवी सामने आने के बाद मचा हड़कंप

भरूच। गुजरात के भरूच जिले के अंकलेश्वर जीआईडीसी क्षेत्र से एक ऐसी घटना सामने आई है जिसने छात्राओं की सुरक्षा और समाज में बढ़ती हिंसा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्कूल में हुए एक कथित विवाद ने इतना भयावह रूप ले लिया कि 12वीं कक्षा में पढ़ने वाली दो सगी बहनों पर बीच सड़क पर कथित रूप से एक छात्रा और उसके परिवार के सदस्यों ने हमला कर दिया। आरोप है कि दोनों बहनें अपनी स्कूटी से ट्यूशन जा रही थीं, तभी उन्हें रास्ते में रोककर मारपीट की गई। घटना का कथित सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद मामला तेजी से चर्चा में आ गया है। वीडियो सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से साझा किया जा रहा है, जबकि पुलिस ने मामले में शिकायत दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और आरोपियों की तलाश में छापेमारी कर रही है।

पीड़ित छात्रा संस्कृति सेंगर के अनुसार, इस पूरे घटनाक्रम की शुरुआत स्कूल में हुए एक पुराने विवाद से हुई थी। उसने आरोप लगाया कि उसकी एक सहपाठी से किसी बात को लेकर कहासुनी हुई थी, जिसके बाद दोनों के बीच तनाव बना हुआ था। संस्कृति का दावा है कि इसी रंजिश के चलते कथित तौर पर दूसरी छात्रा ने अपने परिवार के सदस्यों को इस मामले में शामिल किया और बाद में सुनियोजित तरीके से हमला किया गया।

पीड़िता के अनुसार, घटना वाले दिन वह अपनी सगी बहन के साथ स्कूटी से ट्यूशन के लिए जा रही थी। रास्ते में आरोपियों ने उनका पीछा किया और कथित रूप से अपनी गाड़ी उनकी स्कूटी के सामने लाकर रोक दी, जिससे दोनों बहनें सड़क पर गिर गईं। इसके बाद उनके साथ मारपीट शुरू कर दी गई। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि एक आरोपी ने क्रिकेट बैट से हमला किया, जबकि अन्य लोगों ने भी दोनों बहनों के साथ कथित रूप से मारपीट की।

पीड़ित पक्ष का आरोप है कि हमले के दौरान न केवल शारीरिक हिंसा की गई, बल्कि उनके साथ अभद्र व्यवहार भी किया गया। छात्राओं ने आरोप लगाया है कि उन्हें सार्वजनिक रूप से अपमानित करने की कोशिश की गई और उनके प्रति आपत्तिजनक टिप्पणियां की गईं। घटना के दौरान दोनों बहनों के चीखने-चिल्लाने पर आसपास के लोग मौके पर

पहुंचे। इसी बीच सूचना मिलने पर उनके परिजन भी वहां पहुंच गए। इसके बाद कथित रूप से आरोपी मौके से फरार हो गए। हमले में घायल दोनों छात्राओं को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। अस्पताल से बातचीत में पीड़िता संस्कृति ने प्रशासन से न्याय की मांग करते हुए कहा कि इस मामले में दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। उसने कहा कि यदि ऐसी घटनाओं पर समय रहते कठोर कदम नहीं उठाए गए, तो छात्राओं और महिलाओं की सुरक्षा पर गंभीर असर पड़ेगा। पीड़िता ने यह भी कहा कि वह चाहती है कि कानून के अनुसार सभी आरोपियों को सजा मिले ताकि भविष्य में कोई इस तरह की घटना को अंजाम देने का साहस न कर सके।

घटना की जानकारी मिलते ही अंकलेश्वर जीआईडीसी पुलिस सक्रिय हो गई। पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज अपने कब्जे में ले ली। प्रारंभिक जांच के दौरान सामने आए वीडियो और पीड़ित पक्ष के बयान के आधार पर नामजद आरोपियों के खिलाफ विभिन्न गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, मामले की जांच कई पहलुओं से की जा रही है। घटना में शामिल सभी व्यक्तियों की भूमिका की जांच की जा रही है और उपलब्ध डिजिटल साक्ष्यों का विश्लेषण किया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष टीमें गठित की गई हैं और संभावित ठिकानों पर लगातार छापेमारी की जा रही है। अधिकारियों ने भरोसा दिलाया है कि जांच निष्पक्ष तरीके से पूरी की जाएगी और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी। इस घटना ने स्थानीय लोगों और अभिभावकों में भी गहरी चिंता पैदा कर दी है। दिनदहाड़े सार्वजनिक सड़क पर छात्राओं के साथ हुई कथित मारपीट ने कानून-व्यवस्था और छात्र-छात्राओं की सुरक्षा को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। लोगों का कहना है कि यदि स्कूल स्तर के विवाद इस तरह हिंसक घटनाओं में बदलने लगें, तो यह समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय है। कई अभिभावकों ने स्कूलों में विवादों के समय पर समाधान और छात्रों के बीच संवाद की बेहतर व्यवस्था की आवश्यकता पर भी जोर दिया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि किशोरों के बीच होने वाले विवादों को समय रहते समझना और उनका समाधान निकालना आवश्यक है, ताकि वे हिंसा का रूप न लें। साथ ही, यदि किसी घटना में परिवार के सदस्य भी शामिल पाए जाते हैं, तो यह स्थिति और अधिक गंभीर हो जाती है तथा कानून के अनुसार इसकी निष्पक्ष जांच आवश्यक होती है।

फिलहाल पुलिस इस मामले में सभी तथ्यों की पुष्टि कर रही है। जांच एजेंसियां सीसीटीवी फुटेज, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और अन्य उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर पूरी घटना की कड़ियां जोड़ रही हैं। पुलिस ने आम नागरिकों से भी अपील की है कि मामले से जुड़े किसी भी अपुष्ट वीडियो, दावे या अफवाह को बिना पुष्टि के सोशल मीडिया पर साझा न करें और केवल आधिकारिक जानकारी पर भरोसा रखें।

यह मामला एक बार फिर इस बात की याद दिलाता है कि स्कूल या व्यक्तिगत विवाद यदि समय रहते नहीं सुलझाए जाएं तो वे गंभीर आपराधिक घटनाओं का रूप ले सकते हैं। अब इस पूरे प्रकरण में पुलिस जांच, आरोपियों की गिरफ्तारी और आगे की न्यायिक प्रक्रिया पर सभी की निगाहें टिकी हुई हैं।

सूरत में जलभराव के खिलाफ अनोखा विरोध, बेसमेंट में मिली मछली का नाम रखा 'SMC'; वायरल वीडियो ने नगर निगम की तैयारियों पर उठाए सवाल

सूरत। देश के सबसे तेजी से विकसित हो रहे शहरों में शामिल और 'स्मार्ट सिटी' के रूप में पहचान बना चुके सूरत में मानसून की पहली तेज बारिश के साथ ही जलभराव की पुरानी समस्या एक बार फिर सुर्खियों में आ गई है। हर साल प्री-मानसून तैयारियों और जलनिकासी व्यवस्था को लेकर किए जाने वाले दावों के बीच इस बार एक व्यापारी ने विरोध का ऐसा अनोखा तरीका अपनाया, जिसने सोशल मीडिया पर व्यापक चर्चा छेड़ दी। वेसू क्षेत्र में बारिश के बाद एक व्यावसायिक परिसर के बेसमेंट में भरे पानी से मिली एक जीवित मछली का नाम उसने 'SMC' (सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन) रख दिया। इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है और लोग इसे नगर निगम की जलनिकासी व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य मान रहे हैं।

घटना वेसू स्थित वीआईपी रोड पर भगवान महावीर कॉलेज के समीप बने 'ओफिरा बिजनेस हब' की बताई जा रही है। हाल ही में हुई भारी बारिश के बाद इमारत के बेसमेंट में बड़ी मात्रा में पानी भर गया। जलभराव इतना अधिक था कि पार्किंग पूरी तरह पानी में डूब गई और दुकानदारों के साथ-साथ ग्राहकों की आवाजाही भी प्रभावित हो गई। कई व्यापारियों को अपनी दुकानों तक पहुंचने में परेशानी का सामना करना पड़ा, जबकि बेसमेंट में खड़े वाहनों को भी नुकसान पहुंचने की आशंका पैदा हो गई।

व्यापारियों का कहना है कि यह कोई पहली घटना नहीं है। उनका आरोप है कि हर मानसून में इस क्षेत्र में जलभराव की समस्या सामने आती है और नगर निगम से कई बार शिकायत करने के बावजूद इसका स्थायी समाधान नहीं किया गया। उनके अनुसार, बारिश के बाद पानी निकासी की व्यवस्था पर्याप्त नहीं होने के कारण थोड़ी ही देर में बेसमेंट और आसपास का इलाका जलमग्न हो जाता है, जिससे व्यापारिक गतिविधियां प्रभावित होती हैं।

इस बार स्थिति तब और हैरान करने वाली हो गई जब बेसमेंट में जमा पानी में जीवित मछलियां तैरती हुई दिखाई दीं। बारिश के पानी से भरे बेसमेंट में मछलियों का दिखाई देना वहां मौजूद व्यापारियों और कर्मचारियों के लिए आश्चर्य का विषय बन गया। लोगों ने मोबाइल फोन से इसका वीडियो बनाना शुरू कर दिया और देखते ही देखते यह चर्चा का विषय बन गया।

इसी दौरान एक व्यापारी ने विरोध दर्ज कराने का अनोखा तरीका अपनाया। उसने बेसमेंट के पानी से एक जीवित मछली पकड़ी और उसे पानी से भरे एक पारदर्शी प्लास्टिक बैग में रख लिया। इसके बाद नगर निगम की कार्यप्रणाली पर कटाक्ष करते हुए उसने उस मछली का नाम 'SMC' घोषित कर दिया। व्यापारी ने व्यंग्यात्मक अंदाज में कहा कि जब बेसमेंट में मछलियां तैरने लगी हैं, तो यह नगर निगम की जलनिकासी व्यवस्था का सबसे बड़ा प्रमाण है।

मौके पर मौजूद लोगों ने इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो रिकॉर्ड कर लिया, जो कुछ ही समय में सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर वायरल हो गया। वीडियो में व्यापारी नगर निगम की प्री-मानसून तैयारियों, जलनिकासी व्यवस्था और बारिश के दौरान होने वाले जलभराव को लेकर व्यंग्य करते हुए दिखाई देता है। वीडियो सामने आने के बाद बड़ी संख्या में लोगों ने इस पर अपनी प्रतिक्रियाएं दीं।

सोशल मीडिया पर कई लोगों ने व्यापारी के इस विरोध को रचनात्मक और प्रतीकात्मक प्रदर्शन बताया। उनका कहना है कि लंबे समय से बनी समस्याओं की ओर प्रशासन का ध्यान आकर्षित करने के लिए नागरिकों द्वारा इस प्रकार के शांतिपूर्ण और व्यंग्यात्मक विरोध भी प्रभावी माध्यम बन सकते हैं। वहीं कुछ लोगों ने इसे स्मार्ट सिटी परियोजनाओं और नगर निगम के दावों पर सवाल उठाने वाली घटना बताया। दूसरी ओर कई नागरिकों ने यह भी कहा कि सूरत जैसे विकसित शहर में हर वर्ष बारिश के दौरान जलभराव की स्थिति चिंता का विषय है। उनका मानना है कि केवल प्री-मानसून सफाई अभियान चलाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जलनिकासी तंत्र को आधुनिक बनाने, नालों की नियमित सफाई, वर्षा जल निकासी नेटवर्क को मजबूत करने और संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान कर स्थायी समाधान विकसित करने की आवश्यकता है। व्यापारियों का कहना है कि लगातार जलभराव के कारण उन्हें आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है। बेसमेंट में पानी भरने से वाहनों, विद्युत उपकरणों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को नुकसान पहुंचने का खतरा बना रहता है।

एयर इंडिया के विस्तार को मिलेगी नई उड़ान, अगले 18 महीनों में बेड़े में जुड़ेंगे 60 नए विमान; सेवाओं और नेटवर्क के बड़े आधुनिकीकरण की तैयारी

अबू धाबी। टाटा समूह के अधिग्रहण के बाद तेजी से बदलाव के दौर से गुजर रही एयर इंडिया अब अपने बेड़े और सेवाओं के बड़े विस्तार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाने जा रही है। एयर इंडिया समूह ने अगले 18 महीनों में 50 से 60 नए विमान अपने बेड़े में शामिल करने की योजना बनाई है। कंपनी का कहना है कि यह विस्तार केवल विमानों की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं होगा, बल्कि यात्री अनुभव, परिचालन क्षमता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को मजबूत करने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है। एयर इंडिया के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी (सीसीओ) और एयर इंडिया एक्सप्रेस के चेयरमैन निपुण अग्रवाल ने कहा कि विभिन्न चुनौतियों के बावजूद एयरलाइन का परिवर्तन अभियान निर्धारित योजना के अनुसार आगे बढ़ रहा है और आने वाले वर्षों में इसका असर कंपनी के पूरे परिचालन पर दिखाई देगा।

टाटा समूह ने जनवरी 2022 में एयर इंडिया का अधिग्रहण करने के बाद एयरलाइन के व्यापक पुनर्गठन और आधुनिकीकरण की शुरुआत की थी। कई वर्षों तक सरकारी स्वामित्व में रहने के बाद एयर इंडिया के सामने पुराने विमान, सीमित तकनीकी उन्नयन, सेवा गुणवत्ता और परिचालन संबंधी कई चुनौतियां थीं। अधिग्रहण के बाद समूह ने बेड़े के आधुनिकीकरण, नई तकनीकों के उपयोग, ग्राहक सेवाओं में सुधार और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एयर इंडिया की प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति मजबूत करने के लिए दीर्घकालिक योजना तैयार की।

इसी रणनीति के तहत एयर इंडिया ने दुनिया के सबसे बड़े विमान खरीद समझौतों में से एक के अंतर्गत लगभग

600 नए विमानों का ऑर्डर दिया है। हालांकि अब तक इस ऑर्डर के तहत कुल विमानों में से 10 प्रतिशत से भी कम की डिलीवरी हुई है। कंपनी का कहना है कि आने वाले वर्षों में इन विमानों की नियमित आपूर्ति से एयर इंडिया का बेड़ा तेजी से आधुनिक होगा और उसकी परिचालन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

निपुण अग्रवाल ने बताया कि अगले सात से आठ वर्षों तक एयर इंडिया समूह को हर वर्ष औसतन 50 से 60 नए विमान मिलने की उम्मीद है। इनमें 10 से 15 वाइड-बॉडी (बड़े आकार के) विमान होंगे, जिनका उपयोग लंबी दूरी की अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में किया जाएगा। इसके अलावा 45 से 50 नैरो-बॉडी (छोटे आकार के) विमान घरेलू और क्षेत्रीय मार्गों पर परिचालन के लिए शामिल किए जाएंगे। इससे कंपनी को तेजी से बढ़ती घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मांग को पूरा करने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि बेड़े में शामिल होने वाले आधुनिक विमानों से न केवल परिचालन क्षमता बढ़ेगी, बल्कि ईंधन दक्षता में भी सुधार होगा। नए विमान कम ईंधन की खपत, बेहतर तकनीक और आधुनिक केबिन सुविधाओं से लैस होंगे, जिससे यात्रियों को अधिक आरामदायक यात्रा अनुभव मिलेगा और एयरलाइन की परिचालन लागत में भी कमी आएगी।

एयर इंडिया ने यह भी स्वीकार किया कि पुराने विमानों और केबिन से जुड़ी समस्याओं के कारण यात्रियों को कई बार असुविधा का सामना करना पड़ा है। हालांकि कंपनी का कहना है कि अब इन कमियों को चरणबद्ध तरीके से दूर किया जा रहा है। पुराने विमानों का नवीनीकरण, केबिन इंटीरियर का उन्नयन, नई सीटें, बेहतर मनोरंजन प्रणाली, आधुनिक प्रकाश व्यवस्था और अन्य सुविधाओं पर तेजी से काम चल रहा है।

यात्री अनुभव को बेहतर बनाने के लिए एयर इंडिया केवल नए विमान ही नहीं खरीद रही, बल्कि मानव संसाधन और तकनीकी ढांचे में भी बड़े निवेश कर रही है। कंपनी के अनुसार, चालक दल (क्रू) के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आधुनिक बनाया जा रहा है। नई सेवा प्रक्रियाएं लागू की जा रही हैं और डिजिटल तकनीकों के माध्यम से टिकटिंग, चेक-इन, ग्राहक सहायता तथा उड़ान संचालन को अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। एयरलाइन का मानना है कि केवल आधुनिक विमान पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि उच्च गुणवत्ता वाली सेवा और प्रशिक्षित कर्मचारियों का होना भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सफलता के लिए उतना ही आवश्यक है।

एयर इंडिया एक्सप्रेस भी अपने परिचालन में बड़े बदलाव की तैयारी कर रही है। कंपनी ने अगले वर्ष मार्च तक पूरे बेड़े को एक समान (फ्लीट हार्मोनाइजेशन) बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसका उद्देश्य रखरखाव को सरल बनाना, परिचालन लागत कम करना और उड़ानों के संचालन को अधिक कुशल बनाना है। एक समान बेड़े से पायलट प्रशिक्षण, स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता और तकनीकी रखरखाव में भी आसानी होगी।

वहीं एयर इंडिया के बोइंग 787 ड्रीमलाइनर विमानों के व्यापक उन्नयन का कार्य भी तेजी से चल रहा है। कंपनी को उम्मीद है कि अगले वर्ष के मध्य तक इन विमानों का आधुनिकीकरण पूरा हो जाएगा। इसके बाद यात्रियों को लंबी दूरी की उड़ानों में अधिक आधुनिक केबिन, नई सीटें, उन्नत इन-फ्लाइट एंटरटेनमेंट सिस्टम और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

कंपनी ने हाल के महीनों में अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से उत्पन्न चुनौतियों का भी उल्लेख किया। एयर इंडिया के अनुसार, पश्चिम एशिया में बढ़े भू-राजनीतिक तनाव और ईंधन की ऊंची कीमतों के कारण कुछ अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर उड़ानों में अस्थायी कटौती करनी पड़ी थी। कई मार्गों पर परिचालन लागत बढ़ने और हवाई मार्गों में बदलाव के कारण समय-सारिणी भी प्रभावित हुई।

हालांकि एयरलाइन का कहना है कि अब स्थिति में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है और वह इस वर्ष की दूसरी छमाही से अपने अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को फिर से मजबूत करने की तैयारी कर रही है। कंपनी का लक्ष्य उन मार्गों पर सेवाओं को पुनः सामान्य करना है, जो पश्चिम एशिया संकट से पहले संचालित हो रहे थे। साथ ही नए गंतव्यों को जोड़ने और मौजूदा मार्गों पर उड़ानों की संख्या बढ़ाने की संभावनाओं पर भी काम किया जा रहा है।

एयर इंडिया का मानना है कि भारतीय विमानन बाजार दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते बाजारों में शामिल है और आने वाले वर्षों में हवाई यात्रा की मांग लगातार बढ़ेगी। ऐसे में बड़े पैमाने पर नए विमान शामिल करना, सेवाओं का आधुनिकीकरण करना और वैश्विक स्तर की ग्राहक सुविधाएं उपलब्ध कराना कंपनी की दीर्घकालिक रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अगले 18 महीनों में 60 नए विमानों का बेड़े में शामिल होना एयर इंडिया के लिए केवल विस्तार का संकेत नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक परिवर्तन यात्रा का हिस्सा है, जिसके माध्यम से कंपनी स्वयं को एक आधुनिक, प्रतिस्पर्धी और वैश्विक स्तर की एयरलाइन के रूप में स्थापित करना चाहती है। आने वाले वर्षों में नए विमानों की लगातार डिलीवरी और सेवाओं में सुधार के साथ एयर इंडिया भारतीय विमानन उद्योग में अपनी स्थिति को और मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ती दिखाई दे रही है।

गांधीनगर में संत शिरोमणि गुरु रविदारजी महाराज के 650वें जयंती वर्ष को समर्पित समागम आयोजित हुआ

- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने संत शिरोमणि गुरु रविदासजी महाराज के समरसता एवं सनातन के मूल्यों को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने विकास के साथ विरासत, आध्यात्मिक परंपरा तथा सांस्कृतिक गौरव को भी वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाई है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- प्रधानमंत्री के नेतृत्व में समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाएँ किसी भी प्रकार के जाति, धर्म या प्रदेश के भेदभाव के बिना पहुँच रही हैं : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज के 650वें जयंती वर्ष अवसर पर राष्ट्रीय स्मारिका-गुजरात का अनावरण

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा है कि संत शिरोमणि गुरु रविदासजी महाराज ने समग्र मानव जाति को समरसता, समभाव और मानवता का जो अमूल्य संदेश दिया है, उसे जीवन में उतारना ही उनकी सच्ची आराधना है। यदि हम प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर का दर्शन कर सकें, तो समाज से भेदभाव और विवाद अपने आप दूर हो जाएंगे।

श्री पटेल रविवार को गांधीनगर में संत शिरोमणि गुरु रविदासजी महाराज के 650वें जयंती वर्ष को समर्पित समागम को संबोधित करते हुए कहा कि सनातन परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सर्वसमावेशिता है। सनातन किसी एक विचार या संप्रदाय तक सीमित नहीं है, अपितु समग्र मानवता को साथ लेकर चलने का मार्ग दर्शाता है। उन्होंने समाज में समरसता तथा सौहार्द स्थापित करने के लिए संतों के विचारों को आत्मसात करने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने विकास के साथ अपनी विरासत, आध्यात्मिक परंपरा और सांस्कृतिक गौरव को भी वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाई है। काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, महाकाल लोक, पावागढ महाकाली मंदिर में ध्वजारोहण तथा सोमनाथ मंदिर के गौरव की पुनर्स्थापना जैसे अनेक कार्य देश की सांस्कृतिक चेतना को मजबूत बनाने वाले कार्य हैं।

उन्होंने जोड़ा कि विकास तभी टिकाऊ बन सकता है, जब उसके साथ प्रकृति का संवर्धन तथा संस्कृति का जतन भी किया जाएगा। कोरोना महामारी के अनुभवों ने प्रकृति का महत्व और स्पष्ट किया है। इसी कारण प्रधानमंत्री ने बैक टू बेसिक तथा एक पेड़ माँ के नाम जैसे अभियानों द्वारा पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन बनाया है। श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि अंत्योदय के मंत्र को साकार करने वाले प्रधानमंत्री के नेतृत्व में समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाएँ किसी भी प्रकार के जाति, धर्म या प्रदेश के भेदभाव के बिना पहुँच रही हैं। निःशुल्क अनाज, आयुष्मा भारत योजना, उज्ज्वला योजना और प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी अनेक कल्याणकारी योजनाओं द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर मिल रहे हैं। मुख्यमंत्री ने सबसे विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए समरसता, सामाजिक एकता तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व के मूल्यों से जुड़कर कार्य करने की अपील की। उन्होंने कहा कि गुजरात विकसित भारत के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाए; इसके लिए सभी के सहयोग तथा संतों के आशीर्वाद जरूरी हैं।

संत शिरोमणि गुरु रविदासजी महाराज के 650वें जयंती वर्ष को समर्पित इस समागम अवसर पर उपस्थित महानुभावों के करकमलों से राष्ट्रीय स्मारिका-गुजरात का अनावरण किया गया।

इस अवसर पर पूज्य निर्मल संत डॉ. स्वामी रामेश्वरांदजी, विधायक सर्वश्री रमणलाल वोरा, भानुबेन बाबरिया, सी. जे. चावडा, पूज्य महामंडलेश्वर 1008 ललित किशोर चरणदासजी महाराज, पूज्य शेरनाथ बापू, पूज्य महामंडलेश्वर 1008 महेन्द्रनाथ गिरीजी महाराज, पूज्य विजय बापू, पूज्य राजेन्द्रदासजी महाराज, पूज्य रामबापू, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र के सह-संपर्क अध्यक्ष श्री जसबीर सिंहजी, गांधीनगर विभाग संघचालक श्री प्रकाशभाई परमार, संत श्री रोहिदास सेवा समाज के अध्यक्ष श्री दिनेशकुमार परमार, संगत उद्घोष के राष्ट्रीय महासचिव श्री बलजीत सिंह संधु सहित संत-महंत और अग्रणी उपस्थित रहे।

सूरत टेक्सटाइल मार्केट चुनाव में प्रगति पैनल का ऐतिहासिक विजय अभियान, सभी 17 सीटों पर कब्जा; रिकॉर्ड 90% मतदान ने रचा नया इतिहास

सूरत। देश के सबसे बड़े वस्त्र व्यापार केंद्रों में शामिल दी सूरत टेक्सटाइल मार्केट को-ऑपरेटिव शॉप्स एंड वेयरहाउस समिति लिमिटेड (एसटीएम) के प्रबंध समिति चुनाव में इस बार बड़ा राजनीतिक और कारोबारी उलटफेर देखने को मिला। शनिवार को हुए चुनाव में प्रगति पैनल ने ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए सामान्य वर्ग की सभी 17 सीटों पर शानदार जीत दर्ज की। इस जीत के साथ ही पैनल ने न केवल प्रबंधन पर अपना पूर्ण वर्चस्व स्थापित किया, बल्कि वर्षों से प्रभाव रखने वाले एकता पैनल को भी करारी शिकस्त दी। चुनाव परिणाम को सूरत टेक्सटाइल मार्केट के इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक जनादेशों में से एक माना जा रहा है।

इस चुनाव की सबसे बड़ी विशेषता रिकॉर्ड मतदान रहा। टेक्सटाइल मार्केट के इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में सदस्यों ने मतदान में भाग लिया। कुल 789 मतदाताओं में से 711 सदस्यों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया, जो लगभग 90 प्रतिशत मतदान के बराबर है। इसे एसटीएम के चुनावी इतिहास का अब तक का सर्वाधिक मतदान माना जा रहा है। भारी मतदान ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस बार व्यापारी वर्ग चुनाव को लेकर बेहद गंभीर और उत्साहित था।

शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक मतदान पूरी तरह शांतिपूर्ण और सुव्यवस्थित वातावरण में संपन्न हुआ। मतदान केंद्रों पर सुबह से ही मतदाताओं की लंबी कतारें देखने को मिलीं। युवा व्यापारियों के साथ-साथ वरिष्ठ सदस्यों और महिला मतदाताओं ने भी बड़ी संख्या में मतदान कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज कराई। पूरे दिन चुनावी माहौल उत्साहपूर्ण बना रहा और किसी प्रकार की अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली।

मतदान समाप्त होने के बाद मतगणना शुरू हुई। कुल 711 मतों में से 37 मत अमान्य घोषित किए गए, जिसके बाद 674 वैध मतों की गणना की गई। शुरुआती दौर से ही प्रगति पैनल ने निर्णायक बढ़त बना ली थी और मतगणना पूरी होने तक यह बढ़त लगातार बढ़ती गई। अंततः परिणाम घोषित होने पर प्रगति पैनल के सभी 17 उम्मीदवार विजयी घोषित किए गए।

प्रगति पैनल के मनीष कांतिलाल जैन को सबसे अधिक 491 मत प्राप्त हुए और वह चुनाव के सबसे लोकप्रिय उम्मीदवार बनकर उभरे। उनके अलावा रंगनाथ सारडा, किशन सिंह झाला सहित पैनल के सभी प्रत्याशियों ने प्रभावशाली अंतर से जीत दर्ज की। दूसरी ओर, पुराने नेतृत्व का प्रतिनिधित्व कर रहे एकता पैनल के कई प्रमुख उम्मीदवारों को अप्रत्याशित हार का सामना करना पड़ा। व्यापारिक गलियारों में इस परिणाम को सत्ता परिवर्तन के रूप में देखा जा रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह परिणाम केवल उम्मीदवारों की जीत या हार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह टेक्सटाइल व्यापारियों की बदलती सोच और नए नेतृत्व के प्रति बढ़ते विश्वास का भी संकेत देता है। पिछले कुछ समय से बाजार के विकास, आधुनिक सुविधाओं, पारदर्शी प्रशासन और व्यापारिक हितों से जुड़े कई मुद्दों को लेकर सदस्यों के बीच व्यापक चर्चा चल रही थी। माना जा रहा है कि इन्हीं मुद्दों का प्रभाव चुनाव परिणामों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

दी सूरत टेक्सटाइल मार्केट की 21 सदस्यीय प्रबंध समिति में कुल 21 सदस्य होते हैं। इनमें 17 सामान्य सदस्य चुनाव के माध्यम से चुने जाते हैं, जबकि दो महिला प्रतिनिधि, एक अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग का प्रतिनिधि और एक सदस्य सूरत महानगर पालिका द्वारा मनोनीत किया जाता है। महिला एवं अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग की तीन सीटों पर उम्मीदवार पहले ही निर्विरोध निर्वाचित हो चुके थे। शनिवार को केवल सामान्य वर्ग की 17 सीटों के लिए मतदान कराया गया, जिन पर प्रगति पैनल ने शत-प्रतिशत सफलता हासिल की।

चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष तरीके से संपन्न कराने के लिए व्यापक व्यवस्थाएं की गई थीं। मुख्य चुनाव अधिकारी अशोक जैन के नेतृत्व में चुनाव अधिकारी अनिल अग्रवाल और महेंद्र पाल खुराना ने पूरी प्रक्रिया की निगरानी की। मतदान से लेकर मतगणना तक सभी चरण व्यवस्थित ढंग से संपन्न हुए। चुनाव समाप्त होने के बाद विभिन्न प्रत्याशियों और व्यापारिक संगठनों ने चुनाव अधिकारियों का निष्पक्ष एवं सफल चुनाव कराने के लिए आभार व्यक्त किया।

परिणाम घोषित होते ही प्रगति पैनल के समर्थकों में उत्साह की लहर दौड़ गई। विजयी उम्मीदवारों का फूल-मालाओं से स्वागत किया गया और समर्थकों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत का जश्न मनाया। पूरे मार्केट परिसर में देर तक बधाइयों का दौर चलता रहा। कई व्यापारियों ने इसे संगठन में नए युग की शुरुआत बताते हुए उम्मीद जताई कि नई प्रबंध समिति व्यापारियों की समस्याओं के समाधान और बाजार के समग्र विकास के लिए प्रभावी कदम उठाएगी।

व्यापार जगत के जानकारों का मानना है कि सूरत टेक्सटाइल मार्केट केवल गुजरात ही नहीं, बल्कि देश के वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण केंद्र है। यहां लिए जाने वाले प्रशासनिक और विकास संबंधी फैसलों का असर हजारों व्यापारियों, कारोबारियों और कर्मचारियों पर पड़ता है। ऐसे में नई समिति के सामने बाजार के आधुनिकीकरण, आधारभूत सुविधाओं के विस्तार, सुरक्षा व्यवस्था, डिजिटल सेवाओं, पार्किंग, स्वच्छता और व्यापारिक वातावरण को बेहतर बनाने जैसी कई महत्वपूर्ण चुनौतियां होंगी।

रिकॉर्ड मतदान और प्रगति पैनल की एकतरफा जीत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस बार व्यापारियों ने बदलाव के पक्ष में मजबूत जनादेश दिया है। अब सभी की निगाहें नई प्रबंध समिति पर टिकी हैं कि वह चुनाव के दौरान किए गए वादों को किस तरह धरातल पर उतारती है और सूरत टेक्सटाइल मार्केट को विकास की नई दिशा देने में कितनी सफल होती है। यह ऐतिहासिक चुनाव आने वाले वर्षों तक सूरत के व्यापारिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में याद किया जाएगा।